ऋग्वेद | ओ३म् | यजुर्वेद

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 15

वर्ष : 30 | मार्गशीर्ष-पौष | वि०स० 2075 | दिसम्बर 2018 | अंक : 12

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून | वजन: 50 ग्राम

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी की संक्षिप्त जीवनी

आयु			
	वंश	–	क्षत्रिय
	पिता का नाम	–	श्री नानक चन्द
	जन्म	–	22 फरवरी सन् 1856 ई०
	ग्राम व जिला	–	तलवन, जालन्धर (पंजाब)
	जन्म का नाम	–	मुन्शीराम (वृहस्पति)
09 वर्ष	विद्यारम्भ	–	बनारस सन् 1866
18 वर्ष	धर्म विरोधी भाव	–	सन् 1875
22 वर्ष	ऋषि दयानन्द का सत्संग (बांस बरेली)	–	सन् 1879
28 वर्ष	आर्य समाज में प्रवेश	–	सन् 1885
30 वर्ष	वकालत परीक्षा पास की	–	सन् 1887
30 वर्ष	प्रथम पुत्र हरिश्चन्द्र का जन्म	–	सन् 1887
31 वर्ष	कांग्रेस से सर्वप्रथम सम्बन्ध	–	सन् 1889
32 वर्ष	द्वितीय पुत्र इन्द्र चन्द्र का जन्म	–	सन् 1889
32 वर्ष	सद्धर्म प्रचारक का प्रकाशन	–	13 अप्रैल सन् 1889
34 वर्ष	धर्मपत्नी का देहान्त	–	11 अगस्त सन् 1891
35 वर्ष	प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब	–	सन् 1892
41 वर्ष	गुरुकुल खोलने का संकल्प	–	सन् 1898
45 वर्ष	गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना	–	2 मार्च सन् 1902
52 वर्ष	प्रधान भागलपुर हिन्दी साहित्य सम्मेलन	–	सन् 1909
60 वर्ष	सन्यास दीक्षा	–	18 अप्रैल सन् 1917
61 वर्ष	दुर्भिक्ष पीड़ित सेवा (गढ़वाल)	–	सन् 1918
61 वर्ष	राजनीति में सक्रिय भाग	–	सन् 1918
61 वर्ष	घण्टाघर चांदनी चौक पर संगीनो के सामने	–	30 मार्च सप्र 1919
61 वर्ष	जामा मस्जिद में भाषण	–	04 अप्रैल सन् 1919
62 वर्ष	अमृतसर कांग्रेस का स्वागताध्यक्ष	–	सन् 1919
63 वर्ष	श्रद्धा का प्रकाशन	–	सन् 1920
65 वर्ष	असहयोग आन्दोलन में	–	सन् 1921–22
66 वर्ष	हिन्दू सभा की स्थापना	–	सन् 1923
66 वर्ष	शुद्धि सभा की स्थापना	–	फरवरी सन् 1923
66 वर्ष	दक्षिण भारत में	–	सन् 1924
68 वर्ष	दयानन्द जन्म शताब्दी नेतृत्व	–	सन् 1925
69 वर्ष	लिबरेटर का प्रकाशन	–	अप्रैल सन् 1926
69 वर्ष	बलिदान (श्रद्धानन्द बाजार दिल्ली)	–	23 दिसम्बर सन् 1926

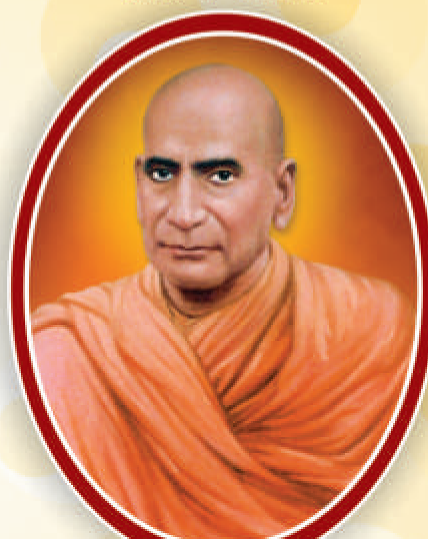

अमर हुतात्मा

स्वामी श्रद्धानन्द

1856–1926

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद | अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

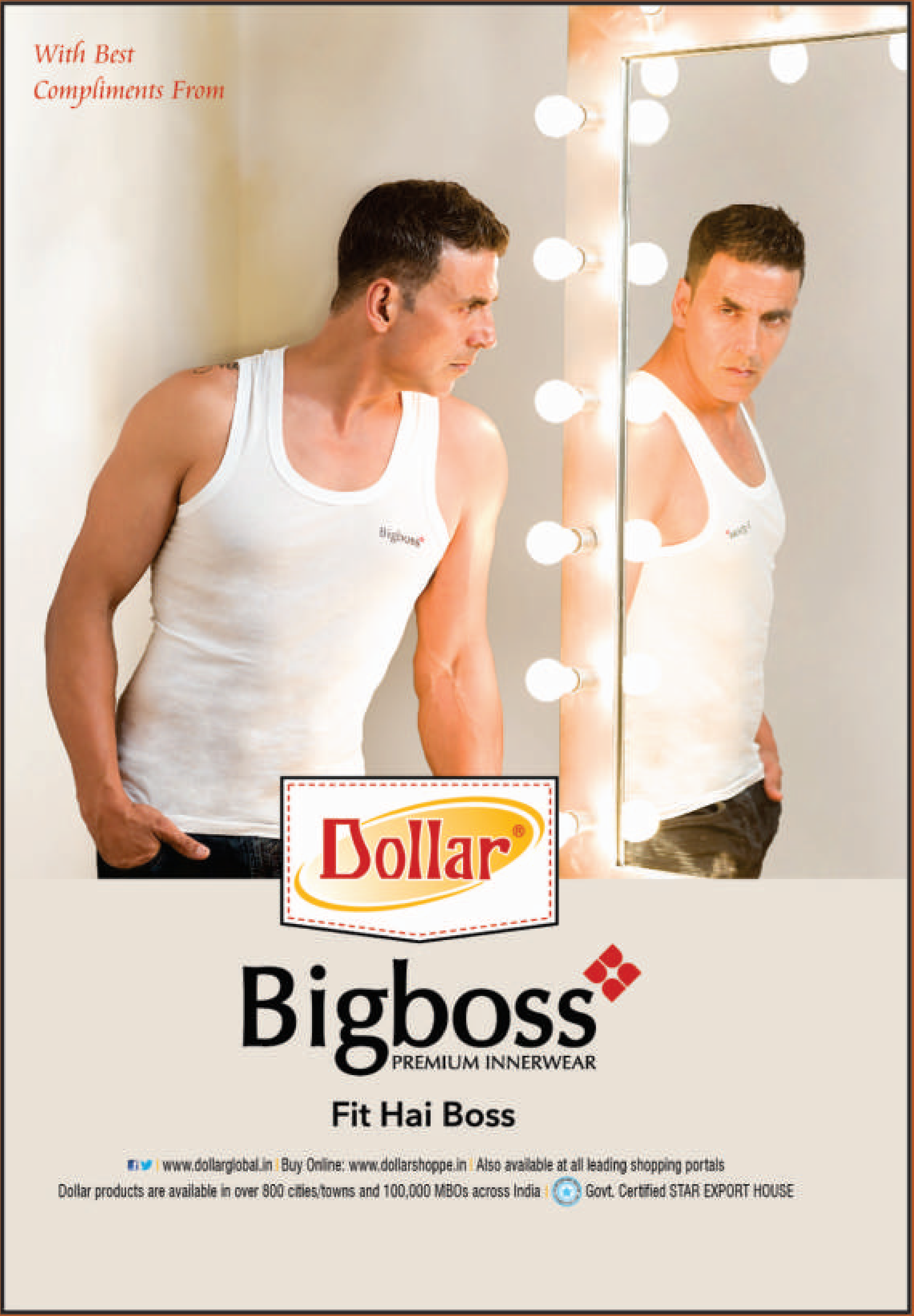
With Best
Compliments From
Dollar®
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

ओ३म्

पवमान

वर्ष–30 अंक–12

मार्गशीर्ष–पौष 2075 विक्रमी दिसम्बर 2018

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119 दयानन्दाब्द : 194

★

–: संरक्षक :–

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	3
आर्यसमाज के महाधन– श्री सतीशचन्द्र तलवार	डा० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
क्रान्ति का बिगुल : महावीर हनुमान का ओजस्वी वक्तव्य	ईश्वरी प्रसाद प्रेम	6
वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून का शरदुत्सव हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न	मनमोहन कुमार आर्य	8
दानदाताओं की सूची		30
आर्य निर्माण शिविर		32

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000/– प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाइट फुल पेज — रु. 2000/– प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाइट हॉफ पेज — रु. 1000/– प्रति माह

पवमान पत्रिका के रेट्स

1. मासिक मूल्य (1 पत्रिका) — रु. 20/– एक प्रति
2. वार्षिक मूल्य (12 प्रतियाँ प्रति वर्ष) — रु. 200/– वार्षिक
3. 15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य — रु. 2000/–

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

कैसे बने मुंशीराम श्रद्धानन्द

श्रद्धा अर्थात् श्रत् नाम सत्य का है, उसके धारण करने की क्रिया और बुद्धि का नाम श्रद्धा है। श्रद्धा से पहले आस्था का होना नितान्त आवश्यक है। यदि किसी की परमेश्वर या किसी व्यक्ति पर आस्था ही नहीं है तो ऐसी अवस्था में श्रद्धा उत्पन्न होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। यह सभी को विदित है कि जवानी के प्रारम्भिक दिनों में मुंशीराम का जीवन विभिन्न प्रकार की बुराइयों से भरा पड़ा था। पहले तो वह मूर्तिपूजक थे और बनारस के हर शिव मन्दिर पर जलाभिषेक किया करते थे। उसके बाद वह और भी भटक गए और उनका परमेश्वर पर कोई विश्वास न रहा। जब उनके पिताजी बरेली में कोतवाल के पद पर तैनात थे, तभी वहां पर प्रवचन कार्य हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती का आगमन हुआ। उनके पिताजी को जब यह ज्ञात हुआ कि महर्षि दयानन्द सरस्वती एक वैदिक विद्वान् और श्रेष्ठ वक्ता हैं, तो उन्होंने अपने पुत्र मुंशीराम को महर्षि दयानन्द के पास प्रवचन सुनने को भेजा। मुंशीराम तर्कबुद्धि थे परन्तु महर्षि के प्रवचनों का उन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती से व्यक्तिगत रूप से मिलकर अपनी कुछ शंकाओं का समाधान करने की इच्छा प्रकट की। क्योंकि उनके पिता प्रवचन कार्य के पण्डाल का संचालन कर रहे थे, उनके प्रभाव से मुंशीराम को महर्षि से व्यक्तिगत रूप से मिलने की इजाजत मिल गई। मुंशीराम ने महर्षि के समक्ष परमेश्वर के होने और न होने के सम्बन्ध में कई शंकाएं रखीं। महर्षि ने तर्कपूर्ण ढंग से सभी शंकाओं का समाधान किया, परन्तु मुंशीराम की परमेश्वर पर कोई आस्था जाग्रत न हो पाई। ऐसे में महर्षि ने कहा कि परमेश्वर पर तुम्हारी श्रद्धा तभी जाग्रत होगी जब परमेश्वर स्वयं चाहेंगे। मुंशीराम जी ने अपने वृतान्त में स्वयं लिखा है कि उन्हें सर्वप्रथम सत्यार्थप्रकाश बाबू केशवराजी ने मूल्य लेकर दिया था। आगे वह लिखते हैं कि संवत 1941 का माघ मास और आदित्यवार का दिन था। नास्तिकपन के गड्ढे से वह निकल चुके थे। धर्म–विषयक गहरे आन्दोलन के पश्चात् सत्यार्थप्रकाश का पाठ वह दिन–रात आरम्भ कर चुके थे। इस प्रकार एक नास्तिक महर्षि दयानन्द सरस्वती की अनुकम्पा और सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव से घोर आस्तिक और आर्यसमाज का एक स्तम्भ बन चुका था। ऋषि दयानन्द के चरणों में सादर समर्पण में वह लिखते हैं कि ''ऋषिवर! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे 41 वर्ष हो चुके, परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय–पट पर अबतक ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते–गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुंई आत्माओं की काया पलट दी, इसकी गणना कौन मनुष्य कह सकता है? परमात्मा के बिना जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है? परन्तु अपने विषय में कह सकता हूँ कि तुम्हारे सत्संग ने मुझे कैसे गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन–लाभ करने के योग्य बनाया?'' यह है मुंशीराम से श्रद्धानन्द बनने की कथा।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

वेदामृत

सच्चा आनन्द

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।
तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः

–ऋ० 10 । 34 । 13

ऋषिः– **कवष ऐलूषः, अक्षो वा मौजवान्**।। देवता– **कृषिप्रशंसा**।। छन्दः– **त्रिष्टुप्**।।

विनय–बिना परिश्रम किये फल चाहने वाले भाइयों! बिना पसीना बहाये सुख-सम्पत्ति के अभिलाषियो! तुम बड़े भारी भ्रम में हो। तुम्हारी यह इच्छा इस जगत् के महान् सिद्धान्त के विपरीत है। इस जगत् के स्वामी, सर्वान्तर्यामी, प्रेरक प्रभु ने यह बात आज मुझे साफ-साफ दिखला दी है, मेरे अन्तःकरण में इसका प्रकाश हो गया है। पहले मैंने भी सुख पा लेने के बहुत-से छोटे रास्ते (Short cuts) ढूँढे, परन्तु आज प्रभु-कृपा से मुझे साक्षात् हो गया है कि बिना स्वयं परिश्रम किये कोई सच्चा सुख नहीं मिल सकता। यह अटल नियम है। इसलिए आज मैं ऊँचे स्थान पर खड़ा होकर सब संसार को कहना चाहता हूँ, मनुष्यमात्र को सुना देना चाहता हूँ–"हे मनुष्य! तू जुआ मत खेल, तू खेती कर!" आज संसार के मनुष्य नाना प्रकार से जुआ खेल रहे हैं, भिन्न-भिन्न जातियों ने अपने-अपने ढंग-सभ्य या असभ्य-निकाल रखे हैं, पर इन सब ढंगों में दो मूलभूत बात रहती हैं, अर्थात् (1) बिना श्रम किये समृद्धि पाने का लोभ और (2) इसके लिए अपने-आपको भाग्य की अनिश्चित, संशयित सम्भावना पर छोड़ देना। इस लोभ और आलस्य में फँसकर मनुष्य जुए के पाप में पड़ता है, पर लोभ और आलस्य के कारण वैयक्तिक ही नहीं, किन्तु सामाजिक सम्पत्ति का भी ह्रास होता है तथा कौटुम्बिक जीवन (जोकि मनुष्य के विकास का साधन है) का नाश होता है। मनुष्यो! तुम्हें सम्पत्ति का सुख (जिसका कि उपलक्षण 'गांवः' है) और कौटुम्बिक सुख (जिसका कि उपलक्षण 'जाया' है) इस कृषि से ही मिलेगा, जुए से नहीं, कुछ श्रम करके कमाने से मिलेगा, दूसरे को ठगने द्वारा मिले धन से नहीं। इसलिए ऐसी थोड़ी कमाई को ही तू बहुत समझ। ईमानदारी और परिश्रम से ही कमाया हुआ थोड़ा-सा धन भी बहुत है, वह वास्तव में बहुत अधिक है। किसी प्रकार के भी जुए (द्यूत) से रहित सच्ची कमाई का एक-एक पैसा एक-एक हीरे के बराबर है, उतना ही सुख देनेवाला है। इसलिए, हे प्यारे! तू अपनी शुद्ध कमाई की रूखी-सूखी में अमृत का आनन्द ले और अपनी शुद्ध कमाई के दो पैसों पर ही बादशाह की मात करनेवाले गर्व के साथ सच्चा आनन्द लूट।

शब्दार्थ– अक्षैः मा दीव्यः= तू कभी जुआ मत खेल, किन्तु **कृषिं इत् कृषस्व**=खेती ही का काम परिश्रमपूर्वक कर **वित्ते बहु मन्यमानः**= परिश्रम से मिले धन को ही बहुत मानता हुआ उसी में **रमस्व**= आनन्दित, प्रसन्न और सन्तुष्ट रह। **कितव**=हे जुआ खेलनेवाले! **तत्र**=इसी परिश्रम की कमाई में ही **गावः**= गौ आदि सब सच्ची सम्पत्ति हैं और **तत्र जाया**=इसी में सब गृहस्थ-सुख हैं। **तत्**=यह बात **अर्यः अयं सविता**=मेरे स्वामी इस प्रेरक प्रभु ने **मे**=मुझे **वि चष्टे**=अच्छी तरह दिखला दी है।

आर्यसमाज के महाधन-श्री सतीशचन्द्र तलवार

—डा० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

एक संभ्रान्त आर्य दम्पत्ति श्री बसन्तलाल तलवार और श्रीमती ज्ञानवती के परिवार में दिनांक 23 अक्टूबर, 1938 को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जो आगे चलकर हमारे इस लेख के नायक सतीशचन्द्र तलवार कहलाये। आप बचपन से ही अनोखी प्रतिभा के धनी थे और अपने कृत्यों और सात्त्विक वृत्ति के आधार पर अपने अन्य भाई – बहिनों में सर्वोप्रिय प्रमाणित हुए। उनके पिता बसंतलाल जी मूल रूप से आर्यसमाज के वैदिक सिद्धान्तों से जुड़े हुए थे और नियमित रूप से प्रत्येक रविवार को सपरिवार साप्ताहिक सत्संग में आर्यसमाज जाकर भाग लेते थे। आप लायलपुर में निवास करते थे। यह स्थान अब पाकिस्तान में फैजलाबाद के नाम से जाना जाता है। सन् 1947 में देश के विभाजन के समय वे बरेली आ गए और कुछ वर्षों तक बरेली में निवास करने के बाद दिल्ली चले गए। पिता बसन्तलाल के द्वारा प्रदत्त संस्कारों का प्रभाव सतीशचन्द्र और उनके भाइयों और बहिन पर पड़ा और सभी बच्चे वैदिक संस्कारों को प्राप्त करने में सफल रहे थे।

आपकी प्रारम्भ से ही मेधा बुद्धि थी। कुशाग्र बुद्धि होने के कारण आपकी गणित और विज्ञान में विशेष अभिरुचि थी। इसी कारण 19 वर्ष की अल्प आयु में ही आपने मैकेनिकल इंजीनियरिंग में, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था। इस उपलब्धि के लिए उन्हें सर सय्यद स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया था। हम समझते हैं कि वह गुरुदत्त विद्यार्थी जैसी प्रतिभा के धनी थे, इसीलिए एक मुस्लिम विश्वविद्यालय में उस अल्प आयु में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने में सफल हो पाए थे। इंजीनियरिंग की मैकेनिकल शाखा से ग्रेजुएशन करने के बाद आपने भारत में रह कर कुछ समय तक अनुभव प्राप्त किया और तदोपरान्त वे जर्मनी चले गए। वहां ढाई वर्ष तक किसी कम्पनी में सेवा करते रहे।

इसके बाद वे फ्रांस चले गए और वहां की एक कम्पनी में उन्होंने एक वर्ष तक बड़ी लगन और निष्ठा के साथ कार्य किया। पारिवारिक स्नेह की डोर में बंधा होने के कारण वे भारत वापस लौट आए। कुछ वर्षों बाद सन् 1968 में उनका पाणिग्रहण संस्कार विभा जी से हुआ। विभाजी आगे चल कर यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज, जिसे आजकल गुरु तेग बहादुर हॉस्पिटल नई दिल्ली के नाम से जाना जाता है, की हैड ऑफ द डिपार्टमैंट बनीं। इनके पुत्र डॉ विनीत तलवार राजीव गांधी कैन्सर इंस्टिट्यूट रोहिणी दिल्ली में मेडिकल औंकोलोजी विभाग के निदेशक हैं और अपना कार्य बड़ी निष्ठा और प्रवीणता से करते हैं। डॉ० विनीत तलवार का विवाह डॉ० ज्योति से हुआ है। आप सत्यवती आइ हॉस्पिटल, नौएडा के आइ डिपार्टमैंट की हैड हैं। आपका जन्म एक सनातनी परिवार में हुआ था, परन्तु आपने विवाह के बाद ससुराल के वैदिक संस्कारों को पूर्ण रूप से अंगीकृत कर लिया है। आपके परिवार के सभी सदस्य साप्ताहिक सत्संग आदि गतिविधियों में भाग लेते हैं। साथ ही आपके यहां मासिक वेदवाणी, पवमान आदि पत्र–पत्रिकाएं मंगाई जाती हैं, जिनका स्वाध्याय माताजी विभा और परिवार के सभी सदस्य करते हैं। जूनियर तलवार दम्पत्ति की एक पुत्री है जो 17 वर्ष की हो चुकी है। पुत्री महक की अभिरुचि आर्ट्स विषयों की ओर है। छोटा पुत्र सोहम् अभी कक्षा 7 में पढ़ रहा है। इस प्रकार यह वंश बेला बढ़ते

हुए और साथ ही वैदिक संस्कारों को ग्रहण करते हुए पुष्पित और फलित हो रही है।

श्री सतीश तलवार की एक पुत्री हैं जिनका नाम वन्दना है। आप एक डैन्टल सर्जन हैं। आपका विवाह श्री निष्काम भसीन से हुआ है। आपकी एक पुत्री है जिसका नाम काव्या है। आपका पूरा परिवार वैदिक संस्कारों से ओतप्रोत है और आर्यसमाज के सत्संगों व अन्य गतिविधियों में भाग लेता है।

अब हम पुनः इस लेख के नायक श्री सतीश तलवार की उपलब्धियों और कृत्यों का वर्णन करना चाहेंगे। जैसा कि हम उपरोक्त रूप से वर्णित कर चुके हैं, अपने पिता बसंतलाल से ही उन्हें आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का परिचय मिल चुका था जिससे वे अत्यन्त प्रभावित थे। बड़े होने पर उनकी आस्था दृढ़ होकर श्रद्धा में परिवर्तित हो गई। वह महात्मा आनन्द स्वामी के परम अनुयायी बने। वह वर्ष में अपना अधिकांश समय वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी की मनोरम वादियों में साधना और स्वाध्याय में बिताते थे। यहां पर आपने अपनी पूजनीय माताजी श्रीमती ज्ञानवती की स्मृति में एक कक्ष भी बनवाया हुआ है। वे आर्यसमाज साकेत, नई दिल्ली के आजीवन सदस्य रहे और संस्था के सभी कामों में अत्यन्त उत्साह से भाग लेते थे। यहां पर उनका कई आर्यसमाज के विद्वानों के साथ सम्पर्क हुआ करता था। वे मानवता प्रेमी थे। लोगों, विशेषकर दीन–हीनों के प्रति उदारता और स्नेह का भाव सदा रहता था। सेवाभाव से वह परिपूर्ण रहते थे। जो भी लोग उनके सम्पर्क में आते थे, उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते थे। यश और धनार्जन की ओर उन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया। समाज में बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी का वे सम्मान करते थे। कई सुयोग्य छात्रों की वे छात्रवृत्तियों के माध्यम से सहायता करते रहते थे।

उनके निजी पुस्तकालय में समस्त वेदों के विभिन्न भाष्यकारों द्वारा किए गए भाष्य, ब्राह्मण, उपनिषद्, शडदर्शन, मनुस्मृति, गीता की विभिन्न टीकाएं, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थ उपलब्ध थे। वे इनका निरन्तर स्वाध्याय करते रहते थे। वे अत्यन्त स्वाध्यायशील ही नहीं थे अपितु उनकी लेखन में भी गहन रुचि थी। उन्होंने अत्यन्त गहन चिन्तन और पुरुषार्थ से 'गायत्री की महत्ता' नामक एक पुस्तक अपने निजी हस्तलेख में अलंकृत करते हुए लिखी है। इसमें पाठकों के लिए वेद, दर्शनों और गीता आदि विभिन्न शास्त्रों का सार दिया गया है। जो पाठक जितना अधिक चिन्तक और शास्त्र पारंगत होगा, उसे यह ग्रन्थ उतना ही अधिक रोचक लगेगा और उसे उतना ही अधिक ज्ञान की प्राप्ति होगी। इस पुस्तक की अन्य विशेषता यह है कि इसका लेख इतना सुन्दर और सुस्पष्ट है कि हमें सहसा आदि उपन्यास सम्राट देवकीनन्दन खत्री की हस्तलिपि का स्मरण हो आता है। मेरी दृष्टि में यह एक अकेली कृति ही आपको आर्य लेखक के रूप में अमर करने के लिए पर्याप्त है, परन्तु आपने महर्षि दयानन्द के कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' का एक संक्षिप्त संस्करण तैयार कर रखा है जो एडिटिंग की प्रक्रिया में है और शीघ्र ही प्रकाशित हो कर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाएगा। इसके अतिरिक्त आपने 52 मंत्रों व्याख्या भी लिखी है।

ज्ञान, भक्ति और कर्म मार्ग के यह पथिक दिनांक 19 मई, 2011 को इस देहयोनि को त्याग कर अपनी अनन्त यात्रा के लिए प्रस्थान कर गये, परन्तु उनके द्वारा स्थपित आदर्श समाज के सभी सदस्यों और परिजनों का सदैव मार्गदर्शन करते रहेंगे। हम इस महान् आत्मा को शत् शत् नमन करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

क्रान्ति का बिगुल : महावीर हनुमान का ओजस्वी वक्तव्य

—ईश्वरी प्रसाद प्रेम

ऋषि आश्रम से कुछ दूरी पर आज एक विराट् 'वानर युवक सम्मेलन' का आयोजन है। पता नहीं कब किस प्रकार से सारे वानर राष्ट्र के संकल्पशील युवकों को इस सम्मेलन की सूचना मिली। किसी को कुछ पता नहीं। निश्चित तिथि और समय पर राष्ट्रोद्धार के व्रत में दीक्षित वानर युवक टिड्डी दल की तरह उमड़े चले आ रहे हैं। वे एक बड़ी संख्या में उपस्थित हैं और युवक हृदय—सम्राट महावीर हनुमान उन्हें सम्बोधित कर रहे हैं—

''साथियों! आप यहां क्यों इकट्ठे हुए हैं, आपसे छिपा नहीं है। ऋषियों को यह पुण्य भूमि, महान् आर्यावर्त्त के अंगभूत अपना यह वानर राष्ट्र आज आसुरी सभ्यता का क्रीत दास बना है। यों कहने को यह हमारा अपना राज्य है, स्वराज्य है पर निश्चय ही यह 'सु—राज्य' नहीं है। यों महाराज बाली जैसा प्रबल पराक्रमी और अद्वितीय शूरवीर हमारा शासक है, पर लंकाधिपति रावण की वैज्ञानिक उपलब्धियों की चकाचौंध में महाराज के नेत्र चौंधिया गये हैं। रावण ने नये—2 वैज्ञानिक अस्त्र—शस्त्रों के बल पर जो भौतिक सफलतायें प्राप्त की हैं, उससे उसे उन्माद हो गया है। उसके अहं ने आसमान को छू लिया है। सृष्टिकर्त्ता के अस्तित्व को उसने चुनौती दी है। उसकी सोने की लंका ने उसकी आत्मा को ही सुला दिया है। चारों वेदों और छः वेदांगों का अध्येता होकर—यों 'दस शीस' होकर भी रावण ने अपने आचरण द्वारा आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व को अस्वीकार कर दिया है। वैदिक यज्ञों का ध्वंस करना और उनके स्थान पर यज्ञों में मांस मद्यादि की आहुतियाँ देना, ऋषियों से कर देने का आग्रह करना, उसके अभाव में उन्हें अनेक विध मार्मिक कष्ट देना तथा ऋषि आश्रमों को उजाड़ना जैसे राक्षस—सैन्य का नित्य कर्म ही बन गया है। मांस और शराब के दौर चलते हैं। पापी रावण ने अनेक देवियों—सुन्दरियों को अपना अंगशायिनी बना उनका सतीत्व नष्ट किया है। चतुर्दिक अनाचार और वामाचार का बोलबाला है।

हमारे महाराज बाली यद्यपि इतने समर्थ और सशक्त हैं कि एक बार उन्होंने इस पापी को छः महीने अपनी कैद (कांख) में रखा था। पर पश्चात् न जाने क्यों उन्होंने इसके साथ सन्धि कर ली। इतना ही नहीं हमारे महान् राष्ट्र की पवित्र भूमि में कई स्थान पर राक्षसों की सैनिक छावनियाँ बनाने की अनुमति भी उन्होंने दे डाली। परिणाम हमारे सामने है। इस ऋषि भूमि में ही आज ऋषियों का आर्त्तनाद सुनाई पड़ रहा है। हमारी माँ—बहिनों की लाज सुरक्षित नहीं है। हमारी नई पीढ़ी मांस—मन्दिरा आदि अनेक—2 दुराचारों का शिकार होती जा रही है। पूर्वजों का मखौल उड़ाया जाता है और विज्ञान के नाम पर प्रच्छन्न भौतिकवाद की पूजा ने मनुष्य को हृदय—हीन तथा पशु से भी पतित बना दिया है। परम पुनीत वैदिक संस्कृति के खण्डहरों पर आसुरी सभ्यता का यह ताण्डव नृत्य अब सर्वथा असह्य है। वीरो उठो! कर्त्तव्य के आह्वान और समय की पुकार को सुनो। प्यारी मातृभूमि की यह मानसिक दासता, यह बौद्धिक गुलामी और यह

सांस्कृतिक विनाश की राहें जिन्हें स्वीकार नहीं हैं, जिन्हें शरीर के साथ ही आत्मा से भी प्यार है वे आयें और बलिदान की राह में हमारे साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ें।''

उसी भावावेश के साथ महावीर कह रहे थे– ''हमने क्रान्ति का झण्डा उठाया है। यह झण्डा धर्म का झण्डा है, सत्य और न्याय का झण्डा है, यह प्रेम और सद्भाव का झण्डा है, संस्कृति और सदाचार का झण्डा है। अपने बच्चों के समान ही जो राष्ट्र के शत–शत बच्चों के भविष्य को प्यार करते हैं, अपनी मां–बहिन के तुल्य ही जिनके निकट राष्ट्र की हर नारी उनकी अपनी मां–बहिन के तुल्य है, वे आयें हम दीवानों के साथ। समय आ गया है जब मातायें अपने वीर पुत्रों को, बहिनें अपने भाइयों को और कुल वधुयें अपने सिन्दूर को राष्ट्र यज्ञ में हवि बनायें–शत–सहस्र बहिनों के सिन्दूर और सन्मान की रक्षा के लिये। हमारा संकल्प है हम इस अनाचार, इस कदाचार और इस बौद्धिक दासता एवं सांस्कृतिक पराधीनता को मिटाकर ही चैन लेंगे। हम क्रान्ति ही नहीं संक्रान्ति चाहते हैं–सम्यक् क्रान्ति। यों ही व्यर्थ की गद्दियों की उलट फेर नहीं, सांस्कृतिक क्रान्ति–संक्रान्ति!

एक साथ शत–शत कण्ठों ने महावीर का साथ दिया–संक्रान्ति चिरंजीवी हो, मानवता अमर है!! संसार के श्रेष्ठ पुरुषों एक हो!!!

नीम से वात रोग से मुक्ति

मैं लक्ष्मी–नारायण मन्दिर का पुजारी हूँ। मैं कुछ समय पूर्व वात रोग से बहुत पीडित था। मेरे दायें कूल्हे से दायें पंजे तक चमक और दर्द रहता था। छः माह इलाज कराया पर कोई लाभ नहीं हुआ। असहनीय दर्द के मारे मैं न बैठ पाता, न खड़ा रह पाता और न लेट ही पाता था। भगवान् श्रीहरि की कृपा से मन्दिर में एक बुजुर्ग आते रहे, आयु लगभग 90 वर्ष रही होगी। उन बुजुर्ग ने मुझसे कहा कि 'पुजारी जी! दवाओं से वात रोग में कम आराम मिलता है। अगर आप हमारी बात मानें तो आप नीम की नयी पत्ती (जो आषाढ़ से आश्विन मास तक आती हैं) डेढ़ तोला सुबह खाली पेट चबाकर खायें और रात को सोते समय 50 ग्राम गुड़ और 1 तोला शुद्ध घी का सेवन करें। पानी तुरन्त न पिये तो आपको पंद्रह दिन में वात रोग से आराम मिल जायगा।' मैं तो सब ओर से निराश हो ही चुका था। अतः मैंने उन बुजुर्ग सज्जन की बात मानना ही उचित समझा। संयोग से उस समय आषाढ़ का महीना था। नीम में नयी पत्तियाँ निकल रही थीं। मैंने नित्य खाली पेट नीम की डेढ़ तोला पत्ती खाना शुरू किया और रात्रि में सोते समय 50 ग्राम गुड़ एवं 1 तोला शुद्ध घी खाने लगा। श्री हरि की कृपा से कुछ ही दिनों में वात रोग से मुझे मुक्ति मिल गयी। आशा है कि कल्याण के पाठक इस नुस्खे का अवश्य प्रयोग कर लाभ उठायेंगे।

(पं० श्री वीरेन्द्र कुमार जी दुबे, पुजारी श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर, अशोक होटल चौराहा रेलवे स्टेशन रोड, सिविल लाइन्स, झाँसी–264001 (उ०प्र०))

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून का शरदुत्सव हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न

(3 अक्टूबर, 2018 से 7 अक्टूबर, 2018 तक शरदुत्सव का विवरण)

–मनमोहन कुमार आर्य

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून महात्मा आनन्द स्वामी जी की प्रेरणा से अमृतसर के बावा गुरमुख सिंह जी द्वारा स्थापित वैदिक सिद्धान्तों एवं परम्पराओं का पालन करते हुए साधकों के लिये साधना का उपयुक्त वातावरण प्रदान करने वाली देश की प्रमुख संस्था है। सन् 1949 में स्थापित वैदिक साधन आश्रम तपोवन ने अपने आरम्भ काल से ही साधना, सत्संग एवं यज्ञ आदि को प्रमुखता देकर आर्यजगत के अध्यात्म के पिपासुओं को अमृत पान कराया है। महात्मा आनन्द स्वामी, महात्मा प्रभु आश्रित, स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती, महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी जी सहित अनेक ज्ञात व अज्ञात साधकों की यह साधनास्थली रही है। आश्रम दो अलग–अलग स्थानो पर स्थित है। दोनों के बीच 3 किमी. की दूरी है। मुख्य आश्रम देहरादून से रायपुर रोड पर चलकर नालापानी गांव की मैदानी भूमि पर है जहां साधकों के लिये ध्यान कक्ष, यज्ञशाला, सत्संग भवन व वृहद सभागार, पुस्तकालय, गोशाला, आवास व कुटियां, पाकशाला, चिकित्सालय, कार्यालय, बाग–बगीचा आदि सब कुछ है। दूसरा आश्रम इस आश्रम से 3 किमी. दूरी पर पहाड़ियों पर स्थित है जो चारों ओर से साल के वनों से आच्छादित है। यह क्षेत्र निर्जन स्थान है जिसके चहुंओर वन व ऊंचे–ऊंचे वृक्ष हैं। यहां का वातावरण पूर्ण शान्त है। नगरों व बस्तियों के कोलाहल, प्रदूषण व यातायात की ध्वनियों आदि से भी सर्वथा मुक्त है। मुख्य साधनास्थली यही आश्रम है। यहां वर्तमान में पांच कुण्डीय एक वृहद एवं भव्य यज्ञशाला, सभागार, वृक्षों के मूल में साधना के लिये उपयुक्त स्थान, साधकों के लिये कुटियायें एवं अन्य सुविधायें हैं। स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी प्रायः यहां निवास करते हैं। वर्ष में एक दो बार यहां वृहद चतुर्वेद पारायण यज्ञ, स्वाध्याय व साधना शिविर, आश्रम के शरदुत्सव एवं ग्रीष्मोत्सव के यज्ञ एवं सत्संग आदि होते हैं।

आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान ऋषि–भक्त आचार्य आशीष दर्शनाचार्य मुख्य आश्रम में निवास करते हैं, यहां प्रतिदिन होने वाले यज्ञ एवं सत्संगों में भाग लेते हैं तथा साधकों का मार्गदर्शन करते हैं। आश्रम की अपनी एक गोशाला भी हैं जहां अनेक गौवें हैं। यह गोशाला एक पृथक स्थान पर स्थित है जो दोनों आश्रम के बीच में है। तपोवन विद्या निकेतन के नाम से नर्सरी से कक्षा 8 तक का एक विद्यालय भी विगत तीन दशकों से चल रहा है जिसमें 400 बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। बच्चों को वैदिक सिद्धान्तों व मान्यताओं से परिचित कराया जाता है। सप्ताह में एक बार धर्म शिक्षा के अन्तर्गत आश्रम के धर्माधिकारी पं. सूरतराम शर्मा जी बच्चों को वैदिक सिद्धान्तों का परिचय देते हैं। विद्यालय में सप्ताह में कई बार सामूहिक यज्ञ भी किया जाता है। सभी बच्चों को ऋषि दयानन्द के जीवन एवं उनके कार्यों का परिचय दिया गया है और प्रश्नोत्तर द्वारा उनके ज्ञान को अद्यतन किया जाता है। आर्यजगत के विख्यात विद्वान, यज्ञ प्रेमी, सफल व्यवसायी एवं दानी श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी आश्रम के यशस्वी प्रधान पद पर आसीन है जो सभी उत्सवों में उपस्थित होकर यज्ञ के यजमान बनने के साथ

सभी अतिथियों का स्वागत एवं उत्साहवर्धन करते हैं। श्री इ. प्रेमप्रकाश शर्मा जी आश्रम के सुयोग्य मंत्री हैं। आप उत्तराखण्ड पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड के मुख्य महाप्रबन्धक पद से सेवा निवृत हैं। आप सरल स्वभाव, सद्व्यवहार के धनी, कर्मठ एवं पुरुषार्थी हैं। प्रतिदिन आश्रम आतें हैं और सभी गतिविधियों और कार्यों का निरीक्षण करते हैं। आपके कार्यकाल में आश्रम में एक वृहद एवं भव्य सभागार, वृहद यज्ञशाला, वृहद चिकित्सालय, गोशाला, तपोवन विद्या निकेतन का विस्तार आदि अनेक महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए हैं। आश्रम एक मासिक पत्रिका **'पवमान'** का प्रकाशन भी करता है जो विगत 30 वर्षों से निर्धारित तिथि को प्रकाशित होती आ रही है। वर्ष में दो बार पांच दिवसीय उत्सव होता है। ग्रीष्मोत्सव प्रायः मई के महीने में तथा शरदुत्सव प्रायः अक्टूबर के महीने में होता है जिसमें देश भर से ऋषिभक्त, साधक व यज्ञ प्रेमी आकर धर्म व सत्संग लाभ करते हैं। हम स्वयं भी सन् 1970 से एक श्रोता व दर्शक के रूप में इस आश्रम से जुड़े हैं। पांच दिनों के उत्सव में हम प्रातः 6.00 बजे से रात्रि 10.00 बजे तक आश्रम में रहकर प्रत्येक कार्यक्रम में भाग लेते हैं और सभी विद्वानों के विचारों को नोट कर उसे मीडिया के माध्यम से देश–विदेश में पहुंचाने का प्रयत्न करते हैं।

प्रथम दिवस 3 अक्टूबर, 2018 का संक्षिप्त समाचार

वैदिक साधन आश्रम तपोवन–देहरादून का शरदुत्सव 3 अक्टूबर, 2018 को आरम्भ हुआ। प्रातः काल 5.00 बजे से एक घंटा तक योग साधना करने के बाद आश्रम में पधारे ऋषि भक्तों ने मिलकर यजुर्वेद पारायण यज्ञ किया। यज्ञ के ब्रह्मा आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध सन्यासी स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती थे। मन्त्रपाठ गुरुकुल पौंधा के दो ब्रह्मचारियों श्री ओम् प्रकाश और श्री विनीत कुमार ने किया। यज्ञ के ब्रह्मा जी के साथ मंच पर विश्व प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक व गीतकार पं० सत्यपाल पथिक जी एवं उत्सव में प्रवचनों के लिये आगरा से पधारे प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ सहित आश्रम के धर्माधिकारी पं० सूरत राम जी उपस्थित थे। यज्ञ तीन कुण्डों में किया गया जिसके चारों ओर अनेक यजमानों ने यज्ञ किया। अन्य श्रोतागण कुर्सियों व दरियों पर बैठकर यज्ञ के मन्त्रों का पाठ सुनते रहे व यज्ञ के भव्य दृश्य का अवलोकन रहे। यज्ञ के समापन पर सभी यजमानों व यज्ञ में उपस्थित लोगों को आशीर्वाद दिया गया। यज्ञ के बाद यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने सामूहिक प्रार्थना की।

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी द्वारा की गई यज्ञोपरान्त प्रार्थना

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि हमारे राष्ट्र का कल्याण हो। हमने वेद की विद्या व ज्ञान को छोड़ दिया है। हे ईश्वर! आपने देश के नेतृत्व के लिये जिस आत्मा को भार सौंपा है, वह देश का उपकार करने में सफल हो। आप प्रजा को भी सुमति दें। वेद ज्ञान को आगे बढ़ाने वाली विद्या है, वह उन्नति को प्राप्त हो। यज्ञ का संचालन व प्रशासन का कार्य प्रसिद्ध ऋषि भक्त श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी ने योग्यतापूर्वक किया। उन्होंने कहा कि यज्ञ करते समय हमारा ध्यान यज्ञ में ही होना चाहिये। हमारा मन यज्ञ से भिन्न विचारों का चिन्तन न करे, इसका आपको ध्यान रखना चाहिये। इसके बाद प्रसिद्ध गीतकार और भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक जी का एक भजन हुआ। भजन के बोल थे **'हे दुनिया के दाता हमको शक्ति दो। जगत पिता जगत माता हमको शक्ति दो। हम संकट की घड़ियों में घबरायें न, धर्म कर्म को छोड़ अधर्म कमायें न। यही पथिक मन भाता हमको शक्ति दो। हे दुनिया के दाता हमको शक्ति दो'।**

प्रातःकालीन यज्ञ के बाद पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ का व्याख्यान

आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ ने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि हम इस यजुर्वेद पारायण यज्ञ में उपस्थित हैं। उन्होंने कहा कि **हमारी**

पूजा पद्धति सर्वश्रेष्ठ पूजा पद्धति है। हमें जड़ व चेतन देवताओं को समझना होगा। उन्होंने जड़ देवता सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, अग्नि, वायु, जल, अन्न आदि की विस्तार से व्याख्या की। इसके बाद उन्होंने चेतन देवताओं में माता, पिता, आचार्य, अतिथि आदि की चर्चा की और उनके प्रति हमारे कर्तव्यों का बोध कराया। ईश्वर के स्वरूप, उसके गुण, कर्म व स्वभाव सहित उपासना पर भी विद्वान वक्ता ने प्रकाश डाला। उनका प्रवचन ज्ञानवर्धक एवं प्रभावशाली था।

ओ३म् ध्वजारोहण

प्रातः 9.00 बजे ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। आरम्भ में तपोवन विद्या निकेतन के बच्चों ने **'जयति ओ३म् ध्वज व्योम विहारी'** गीत गाया। इसके बाद गुरुकुल पौंधा के दो ब्रह्मचारियों ने वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना का गीत **'ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणों ब्रह्मवर्चसी जायताम'** गाया। इसका हिन्दी में कविता रूप में अनुवाद आश्रम में पधारे सभी ऋषि भक्तों ने मिलकर गाया। स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए कहा कि **ओ३म् परमात्मा का चिन्ह है। सबका नियामक व सबको बनाने वाला परमात्मा है।** संसार में एक ही परमात्मा है। उसी की उपासना सबको करनी चाहिये क्योंकि वही एक मात्र उपासनीय है। उसका सबको मनन करना है और उसके बनाये सब नियमों का पालन करना है। स्वामीजी ने वेदमंत्रों के महत्व को भी बताया। इस अवसर पर महात्मा शैलेश मुनि सत्यार्थी जी ने भी सम्बोधित किया। उन्होंने शिवाजी महाराज और उनके गुरु स्वामी रामदास जी के ओ३म् ध्वज विषयक प्रसंगों को भावूपर्ण शब्दों मे प्रस्तुत किया। इसके बाद आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी ने उत्सव में पधारे सभी ऋषि भक्तों का स्वागत किया और उनसे अनुरोध किया कि वह आश्रम को अपना मानकर व्यवहार करें। विद्युत व जल को आवश्यकता न होने पर बन्द रखें तथा स्वच्छता आदि का भी ध्यान रखें।

ध्वजारोहरण के पश्चात प्रवचनों का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। आर्य भजनोपदेशक श्री रमेश चन्द्र स्नेही जी ने भजन प्रस्तुत किये। उनके भजन की प्रथम पंक्ति थी **'प्रभु तेरा ओ३म् नाम सबका सहारा है'।** इसके बाद पं. नरेश दत्त आर्य जी के दो भजन हुए। प्रथम गाये भजन के शब्द थे **'दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली।'** दूसरा भजन था **'जिसने ईक्षण से अखिल विश्व को बनाया है, वह विश्वकर्मा सारे विश्व में कहाया है।'** इसके बाद श्री पीयूष शास्त्री जी का ईश्वर से सृष्टि रचना के विषय में प्रभावशाली उपदेश हुआ। उन्होंने कहा कि परमात्मा अजन्मा व सर्वव्यापक है। ईश्वर संसार को प्रकृति से बनाते हैं। उन्होंने कहा कि ईश्वर काया रहित हैं। पीयूष जी के बाद पं. सत्यपाल पथिक जी के भजन हुए। उनके भजन के बोल थे **'प्राकृतिक परमाणुओं से सकल सामग्री मिली, स्वयंभू परमात्मा ने तब सकल सृष्टि रची।'** पथिक जी ने दूसरा भजन गाया जिसके बोल थे **'पूर्ण वह परमात्मा है पूर्ण ये संसार है। अपनी–अपनी पूर्णता से पूर्ण हर व्यवहार है।'** इसके बाद आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का व्याख्यान हुआ।

आचार्य पं. उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का व्याख्यान

आचार्य पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि परमात्मा निराकार है। वह वेद ज्ञान देता है। कैसे? इसका उत्तर था कि परमात्मा हमारी आत्मा के भीतर भी विद्यमान है। वह सर्वज्ञ है। वेद उसके ज्ञान में सदा सर्वदा से हैं। ऋषियों की पवित्र आत्मायें परमात्मा की वेद ज्ञान विषयक प्रेरणा को ग्रहण कर लेती है। इसके बाद वह चार ऋषि अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा उस प्राप्त वेद ज्ञान को ब्रह्मा जी को प्रदान करते हैं। ब्रह्मा जी के बाद वेद ज्ञान को बोल कर बताने व सुनकर ग्रहण करने की परम्परा चली जो अद्यावधि जारी है। आचार्य जी ने वेद ज्ञान को सार्वभौमिक ज्ञान बताया और कहा कि यह ज्ञान

परमात्मा की ओर से संसार के सभी मनुष्यों के लिये दिया गया है। आचार्य जी ने विस्तार से सृष्टि रचना पर प्रकाश डाला।

आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी के बाद श्री उम्मेद सिंह विशारद जी ने एक भजन गाया जिसके बोल थे **'हर दिल में जो बसा है'।** इसके बाद स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि परमात्मा ने जीवात्माओं के सुख के लिये संसार की सब चीजें बनाईं हैं। हमारा शरीर उसी ने बनाया है। वह अन्दर से रचना करता है। वह जो वनस्पति उगाता है उसके बीज होते हैं जिनसे वह वनस्पतियां पुनः उगाई जा सकती हैं व उगती हैं। स्वामी जी ने कहा कि परमात्मा ने संसार की रचना आदि कारण प्रकृति से की है। परमात्मा अपनी सामर्थ्य से संसार की रचना करता है। संसार में उसके समान कोई नहीं है। उन्होंने कहा कि ईश्वर ने प्रकृति की सम अवस्था में विषमता उत्पन्न कर सृष्टि को रचा है। हम परमात्मा को जानकर ही जन्म व मरण तथा दुःखों के बन्धन से मुक्त हो सकते हैं। कार्यक्रम के संयोजक श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी ने श्रोताओं को कहा कि आप यहां होने वाले प्रवचनों की मुख्य बातों को अपनी डायरियों में नोट किया कीजिये। बाद में उन पर चिन्तन करें। इससे आपको दीर्घकालीन लाभ होगा। शान्ति पाठ के बाद यह सभा समाप्त हुई। आश्रम के प्रथम दिवस सायं 3.30 बजे से स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद पं. नरेश दत्त आर्य जी के भजन हुए तथा आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का प्रवचन हुआ। यज्ञ के बाद सामूहिक सन्ध्या भी की गई।

शरदुत्सव के प्रथम दिवस की रात्रिकालीन सभा में श्री रमेश चन्द्र स्नेही तथा पं. नरेशदत्त आर्य जी के भजन हुए। इसके बाद पं. वेदवसु शास्त्री का वर्णव्यवस्था पर सारगर्भित प्रवचन हुआ। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज वेदों के आधार पर गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था को मानता है। आर्यसमाज जन्मना जातिवाद को नही मानता। जन्मना जाति की व्यवस्था वेदों की वर्ण–व्यवस्था का समाज में प्रचलित कुछ अन्य मान्यताओं व परम्पराओं की तरह से एक विकार है जो मनुष्य समाज के लिये हानिकारक है। मुख्य वक्ता पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने वर्ण व्यवस्था अपने सम्बोधन में कहा कि लोगों द्वारा वर्ण व्यवस्था विषयक वेद मन्त्र का गलत अर्थ करने से गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित व्यवस्था बन गई। उन्होंने कहा कि **वैदिक साहित्य में ब्रह्म विद्या के जानकार को ब्राह्मण कहते हैं।** जो वेद की परा व अपरा विद्या वा आध्यात्मिक व भौतिक ज्ञान को जानता है उसे भी ब्राह्मण कहते हैं। वर्ण व्यवस्था गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित होती है। हर व्यक्ति को ब्राह्मण व क्षत्रिय नहीं बनाया जा सकता। उन्होंने कहा कि गुरुकुलों में ब्रह्मचारियों के समावर्तन संस्कार के अवसर पर उनका वर्ण निर्धारित हुआ करता था।

शरदुत्सव का दूसरा दिन

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन–देहरादून में चल रहे शरदुत्सव के दूसरे दिन 4 अक्टूबर, 2018 को प्रातः 6.30 बजे से यजुर्वेद पारायण किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी थे। यज्ञ के बाद पं. नरेश दत्त आर्य जी के भजन हुए। उनके गाये गये भजन के बोल थे **'प्रभु का भजन न किया जीवन गंवा दिया, पापों का दमन न किया जीवन गंवा दिया'।** इसके बाद पं. सत्यपाल पथिक जी ने भजन गाया। उन्होंने भजन गाने से पूर्व कहा कि यज्ञ कल्पतरू है, यज्ञ ही कामधेनु है और यज्ञ ही विष्णु है। उन्होंने कहा कि यज्ञ को कामधेनु इसलिये कहा जाता है क्योंकि इसी से सब कुछ प्राप्त होता है। यज्ञ से मनुष्यों की सब कामनायें पूर्ण होती हैं। पं. सत्यपाल पथिक जी ने एक वेदमंत्र पर आधारित स्वरचित भजन सुनाया। उन्होंने मन्त्र में आये इन्द्र शब्द के विषय में बताया कि ऐश्वर्यों के स्वामी को इन्द्र कहते हैं। इन्द्र के अनेक अर्थ हैं। उन्होंने कहा कि परमात्मा

का एक नाम इन्द्र भी है। उनके गाये भजन के बोल थे **'ओ दाता श्रेष्ठ धन देना ओ दाता श्रेष्ठ धन देना'।** इस भजन की कुछ पंक्तियां यह भी थीं **'जीवन के दिन सुन्दर हों प्यारी प्यारी रातें, सब के सब जन करें परस्पर जनहितकारी बातें। पथिक सदा हर जनमानस में अपनापन देना। ओ दाता श्रेष्ठ धन देना।'** भजनों के बाद आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का सम्बोधन हुआ।

आचार्य उमेश चन्द्र जी का यज्ञ एवं संगतिकरण विषयक प्रवचन

आचार्य जी ने कहा कि आज समाज में उन देवताओं का पूजन हो रहा है जो बाजार में बिकते व खरीदे जाते हैं। कारीगर छेनी व हथौड़े से इन्हें बनाते हैं। **इसका परिणाम है कि सारा समाज व देश दुःखी है।** विद्वान आचार्य कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि सभी देवता मरणधर्मा हैं। जब प्रलय अवस्था होती है तो यह सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, अन्न, जल, वायु, अग्नि आदि देवता नहीं रहते। माता–पिता व आचार्य आदि भी मरणधर्मा हैं और वह भी नहीं होते। ईश्वर सृष्टि काल हो या प्रलय काल, नित्य व अनश्वर सत्ता होने से तब भी पूर्ववत् विद्यमान रहता है। आचार्य कुलश्रेष्ठ जी ने यज्ञ के अर्थ देवपूजा, संगतिकरण व दान की चर्चा की। उन्होंने कहा कि यज्ञ में अग्नि तब प्रकट होती है जब यज्ञकुण्ड, यजमान, समिधा, यज्ञ के ब्रह्मा, दीपक, कपूर आदि का संगतिकरण होता है। जिस परिवार के सभी सदस्यों में संगतिकरण होता है उस परिवार में सुख व शान्ति का वास होता है। लोग कहते हैं कि इस परिवार के सभी सदस्य परस्पर मिलकर प्रेम व सद्भाव से रहते हैं। कहीं किसी के मन में द्वेष नहीं होता। यदि ऐसा न हो तो घर परिवार में यज्ञ करने का कोई औचित्य नहीं है।

आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि राष्ट्र और समाज में संगतिकरण न होने से हमारा राष्ट्र मुसीबतों में फंसा है। सब परस्पर मिलकर अपने स्वार्थ छोड़कर सच्चे हृदय से राष्ट्रीय समस्याओं को हल करें, तब संगतिकरण होगा। आचार्य जी ने एक कथा सुनाई। एक युवा अपनी मां को एक पार्क में घुमाने ले गया। मां रूग्ण है। वह चल नहीं सकती। युवा मां का हाथ पकड़ कर धीरे–धीरे उसी गति से चल रहा है जिस गति से मां चल सकती है। युवा को अपनी मां का ध्यान है। वह यह नहीं सोचता कि वह तेज चल सकता है तो उसे तेज चलना चाहिये। उसे अपनी मां के सुख का ध्यान है। इसी को संगतिकरण कहते हैं। आचार्य जी ने कहा कि **यदि युवा अपने परिवारों में वृद्धों के साथ संगतिकरण करेंगे तो वृद्धो को सुख मिलेगा।** परिवार के वृद्धों का सुख उसके युवा सदस्यों के संगतिकरण से ही सम्भव हो सकता है। आचार्य जी ने आगे कहा कि यह संगतिकरण राष्ट्र और परिवारों के लिये बहुत आवश्यक है। अखिल ब्रह्माण्ड में भी संगतिकरण दिखाई देता है। यह संगतिकरण ही यज्ञ है। उन्होने कहा कि यदि ब्रह्माण्ड में किसी सूर्य, चन्द्र या पृथिवी आदि की चाल बिगड़ जाये तो आज ही प्रलय अवस्था आ सकती है।

आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने एक वेदमन्त्र का उच्चारण किया जिसमें कहा गया है कि मनुष्य का शरीर यज्ञ और संगतिकरण करने के लिये हैं। उन्होंने कहा कि परमात्मा भी सृष्टि के देवों के साथ मिलकर संगतिकरण व यज्ञ कर रहे हैं। विद्वान आचार्य ने कहा कि मनुष्य के शरीर रूपी पिण्ड सहित ब्रह्माण्ड तथा पृथिवी पर भी संगतिकरण रूपी यज्ञ चल रहा है। मनुष्य व सभी प्राणियों के शरीरों के सभी अंग आत्मा के साथ संगतिकरण किये हुए है। इस संगतिकरण का परिणाम ही जीवन है। आचार्य जी ने संगतिकरण को भोजन का उदाहरण देकर समझाया। उन्होंने कहा कि हमारे हाथ हमें बताते हैं कि भोजन अधिक गर्म तो नहीं है। नाक सूंघ कर बताती है कि भोजन बासी या दुर्गन्धयुक्त तो नहीं है। भोजन मुंह में डाला तो दांत उसे पीसते हैं। यदि भोजन में कंकड़ हो तो हमें इसका ज्ञान हो जाता है। जिह्वा भोजन का स्वाद बताती है। **यह सब संगतिकरण है और हमारे शरीर**

रूपी पिण्ड में यज्ञ का होना है। कार्यक्रम का संचालन श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी ने बहुत कुशलतापूर्वक कर रहे हैं। उन्होंने आश्रम को छोटी व बड़ी धनराशि देने वाले दानदाताओं के नाम व धनराशि पढ़कर सुनाई। इसी के साथ आज का प्रातःकालीन यज्ञ एवं सत्संग सम्पन्न हुआ। आज वैदिक साधन आश्रम तपोवन द्वारा संचालित तपोवन विद्या निकेतन विद्यालय का वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि वरिष्ठ श्रम अधिकारी डा. नीरज मोहन थे। इसकी वृहद रिपोर्ट प्रस्तुत हैः

आश्रम संचालित 'तपोवन विद्या निकेतन' विद्यालय का भव्य वार्षिकोत्सव

वैदिक साधन आश्रम के अन्तर्गत **'तपोवन विद्या निकेतन'** नाम से एक नर्सरी से कक्षा 8 तक विद्यालय संचालित होता है जहां 400 बालक व बालिकायें पढ़ते हैं। यह विद्यालय वैदिक साधन आश्रम अपने सीमित साधनों से संचालित करता है। विद्यालय को एक समर्पित प्रधानाचार्या श्रीमती उषा नेगी की सेवायें प्राप्त हैं जो इसे सफलता के शिखर पर ले जाने के लिये प्रयासरत हैं। विद्यालय में अधिकांश निर्धन बच्चे पढ़ते हैं परन्तु विद्या अर्जन की दृष्टि से बच्चों का बौद्धिक स्तर किसी पब्लिक स्कूल से कम नहीं है। दिनांक 4–10–2018 को इस विद्यालय का वार्षिकोत्सव आयोजित हुआ जिसमें मुख्य अतिथि डा. नीरज मोहन सहित आश्रम के उत्सव में पधारे सभी ऋषि भक्त श्रद्धालु भी सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम का वृतान्त आपके लिये प्रस्तुत कर रहे हैं।

कार्यक्रम का आरम्भ दीप प्रज्जवलन से हुआ। दीप प्रज्जवलन स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती सहित आश्रम के प्रधान व मंत्री जी आदि अनेक व्यक्तियों के द्वारा सम्पन्न हुआ। इसके बाद सरस्वती वन्दना हुई जिसे विद्यालय की 9 छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। इन छात्राओं ने विशेष प्रभावशाली वेषभूषा धारण की हुई थी। इसके बाद स्वागत गीत भी विद्यालय की इन्हीं छात्राओं द्वारा गाया गया। स्वागत गीत के कुछ शब्द थे **'गीत हम गायेंगे, आगे बढ़ते जायेंगे, प्रकाश हम फैलायेंगे, स्वागतम्, स्वागतम्, स्वागतम्'।** स्वागत गीत के बाद छोटे बच्चों द्वारा समूह नृत्य किया गया। इस गीत में आठ बच्चे आगे और आठ बच्चे उनके पीछे खड़े थे। सभी बच्चों ने लाल व सफेद रंग की वेषभूषा पहन रखी थी जो बहुत आकर्षक दीख रही थी। इस नृत्य में लड़के व लड़कियां दोनों थीं। इन बच्चों का आयुवर्ग लगभग 5 से 8 वर्ष के बीच था। इन बच्चों ने रिकार्ड किये हुए गीत की आवाज पर नृत्य किया। सभी बच्चे आत्मविश्वास से भरे हुए दिखाई दे रहे थे। इसके बाद शहीद भगत सिंह जी पर एक लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। यह नाटिका बहुत प्रभावशाली थी। इसने श्रोताओं के हृदय को द्रवित कर दिया। हमारी आंखे भी गिली हो गई और अन्यों में बहुतों के साथ भी ऐसा ही होने का अनुमान है। इसके बाद आर्य विद्वान एवं प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. विनोद कुमार शर्मा जी ने बच्चों को सम्बोधित किया। **उनका विषय था युवा शक्ति व राष्ट्र भक्ति।**

आर्य विद्वान डॉ. विनोद कुमार शर्मा का प्रभावपूर्ण सम्बोधन

आर्य विद्वान डॉ. विनोद कुमार शर्मा ने कहा कि मातृभूमि, धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिये हमारे क्रान्तिकारियों ने अपना बलिदान दिया। हमारे धर्म व संस्कृति की हत्या हो रही है। हम बच्चों के जीवन का निर्माण करना चाहते हैं। हमारे सामने जो स्थितियां हैं वह शर्मनाक हैं। पिछले दिनों उच्चतम न्यायालय से विवाहोत्सव सम्बन्धों पर जो न्यायिक निर्णय आया है उसकी डॉ. विनोद कुमार शर्मा ने चर्चा की। उन्होंने कहा कि इस निर्णय से हमारे बच्चे और युवा कुण्ठाओं का शिकार होंगे। उन्होंने कहा कि हमारे देश में लिविंग रिलेशन, समलैंगिकता एवं विवाहेतर सम्बन्धों पर कानून आदि पास किये गये हैं। समाज के लिये भद्दे नियम बना दिये गये हैं। उन्होंने कहा कि **आज देश के युवाओं को**

अभद्रता करने की छूट दी गई है। हम अपने बच्चों को अभद्रता नहीं परोस सकते। वर्तमान कानून के अनुसार एक पति अपनी पत्नी को अभद्रता करने से नहीं रोक सकता। उन्होंने कहा कि सरकारी निर्णय गलत है और वैदिक सत्य परम्पराओं तथा हमारे धर्म एवं संस्कृति के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। मैं इसका विरोध करता हूं। मैं इन नियमों का समर्थन किसी स्थिति में नहीं कर सकता। देश व समाज में स्थितियां विकृत हो गई हैं। आधुनिक जीवन शैली बच्चों को कहां ले जा रही है? इससे बच्चे विक्षिप्त अवस्था में आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि यदि हम गलत बात को नहीं रोकते तो इसका अर्थ है कि हम उस गलत बात के पक्षधर हैं। आचार्य विनोद शर्मा जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है कि सन्तान का कल्याण तभी हो सकता है कि जब उसके माता–पिता वैदिक सिद्धान्तों का पालन करने वाले धार्मिक हों। सन्तान को अपने धार्मिक माता–पिता की आज्ञाओं का पालन करने वाला होना चाहिये। उन्होंने कहा कि जब माता–पिता का चरित्र अच्छा नहीं होगा तो बच्चों व समाज का उद्धार नहीं हो सकता।

आचार्य डॉ. विनोद कुमार शर्मा जी ने कहा कि आर्यसमाज के वेद प्रचार के कार्यक्रम आर्यसमाज की चारदीवारी में सीमित रहते हैं। हमें आर्यसमाज मन्दिरों से बाहर जाकर आर्यसमाज की वेद विषयक मान्यताओं का प्रचार करना चाहिये। उन्होंने कहा कि वर्तमान में हम आर्यसमाज का प्रचार आर्यसमाजी विचारधारा के लोगों में ही करते हैं जिससे कोई विशेष लाभ नहीं होता। उन्होंने आगे कहा कि हम विद्यालयों में जाकर छात्र–छात्राओं को जगाने का कार्य करेंगे। डॉ. शर्मा ने कहा की बच्चों को बैठना आना चाहिये। कमर को सीधा करके बैठने से रीढ़ की हड्डी स्वस्थ एवं बलवान रहती है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक मनुष्य को दिन में कम से कम सात बार भूमि पर बैठना चाहिये। भोजन नीचे बैठकर करना चाहिये। सन्ध्या व यज्ञ तो नीचे बैठकर ही सम्पन्न होता है। नाश्ता भी यदि नीचे बैठकर करेंगे तो इससे हमारे पांचन तन्त्र को लाभ होगा।

डॉ. विनोद कुमार शर्मा ने कहा कि बूढ़ा वह है जो धरती पर न बैठ सके, जिससे चला फिरा न जाये और जो रुग्ण हो। उन्होंने कहा कि यह नियम है कि प्रत्येक मनुष्य को सूर्योदय से एक घण्टा पूर्व सोकर उठ जाना चाहिये। शौच से निवृत होकर प्राणायाम व ध्यान करना चाहिये। इससे आपको लाभ मिलेगा। कानों को बन्द करके ओ३म् की ध्वनि करने से मनुष्य की स्मरण शक्ति बढ़ती है। शाकाहारी भोजन मे बहुत शक्ति है। बलवान हाथी और तेज दौड़ने वाला घोड़ा दोनों शाकाहारी प्राणी हैं। आचार्य जी ने कहा कि मांसाहार न करें। अण्डों में विष है, इसलिये इनका सेवन भी कदापि न करें। अंकुरित अन्न को खाना चाहिये। आचार्य जी ने कहा कि जो बच्चे सुगन्धित परफ्यूम आदि का प्रयोग करते हैं उन्हें इससे दमे की बीमारी हो सकती है। उन्होंने आजकल युवाओं में फटे हुए कपड़े पहनने के फैशन की आलोचना की। ऐसा करने वाले लोग समझदार नहीं है। उन्होंने कहा कि आप अपने ऊपर नियंत्रण रखेंगे तभी अच्छे काम कर सकेंगे। आपको सही दिशा में चलना है जिसका उपदेश वेद व शास्त्रों सहित वैदिक विद्वान करते हैं। आप अपने माता–पिता व गुरुजनों का सम्मान करें। उन्होंने बताया कि सन् 1992 में वैदिक साधन आश्रम में एक गुरुकुल चलाया गया था। उसमें वह एक विद्यार्थी थे। आचार्य भद्रकाम जी बच्चों को सारा दिन व्यस्त रखते थे और उनके सभी कृत्यों पर दृष्टि रखते थे। उन्होंने कहा कि लड़की व लड़कों का आपस में हाथ मिलाना अच्छी परम्परा नहीं है। लड़का लड़की को एक दूसरे का स्पर्श नहीं करना चाहिये। इससे अनेक प्रकार की हानियां होती हैं। आचार्य जी ने सबको प्रेरणा देते हुए कहा कि अपने जीवन का उद्देश्य महान बनाईये। आप राजा बन सकते हैं, चपरासी मत बनिये।

डॉ. विनोद कुमार शर्मा जी के सम्बोधन के बाद विद्यालय के बच्चों ने एक अंग्रेजी नाटक प्रस्तुत किया। नाटक के बाद पं. नरेश दत्त आर्य जी का एक भजन हुआ जिसके बोल थे **'नाम बताना नाम बताना'**। यह भजन पं. सत्यपाल पथिक जी का रचा हुआ है। पथिक जी भी इस आयोजन में उपस्थित थे। इसके बाद मुख्य अतिथि डॉ० नीरज मोहन जी का स्वागत आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा सहित स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती उषा नेगी एवं अन्य गणमान्य लोगों ने किया। इसके बाद कन्याओं का एक नृत्य हुआ। कन्याओं के नृत्य के बाद कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों द्वारा एक अंग्रेजी गीत गाया गया। स्कूल के विद्यार्थियों ने इसके बाद संस्कृत श्लोकों का गायन प्रस्तुत किया। इसके अन्तर्गत वेद मन्त्र सहित कुछ प्रसिद्ध श्लोकों का उच्चारण किया गया और उनके हिन्दी में अर्थ भी बताये गये। 4 कन्याओं द्वारा यह आकर्षक प्रस्तुति दी गई। इसके बाद ठीक 11.46 बजे एक हिन्दी नाटक प्रस्तुत किया गया। इस नाटक में आज की राजनीति में स्वार्थ व वोटरों के प्रति नेताओं की धोखाधड़ी को रेखांकित किया गया। नाटक बहुत प्रभावशाली था। जिस कलाकार ने नेता का रोल किया वह बहुत ही प्रभावशाली व कृत्रिमता रहित तथा वास्तविकता को लिये हुए था। इसमें नेताओं की सोच व करतूतों का भी सजीव चित्रण हुआ। अगला प्रोग्राम छात्राओं द्वारा देश भक्ति के गीत पर नृत्य करने का था। इस कार्यक्रम की समाप्ती के बाद बच्चों ने योगासनों का कार्यक्रम किया। अनेक बच्चों ने मंच पर सभी महत्वपूर्ण आसनों को बहुत खूबी के साथ प्रस्तुत किया। सभी बच्चों की एक जैसी वेशभूषा बहुत सुन्दर लग रही थी। अध्यापिका महोदया ने सभी आसनों के महत्व व लाभों को श्रोताओं को बताया। अगला कार्यक्रम डाँडिया नृत्य का था। बताया गया कि यह नाटक गुजरात में नवरात्रों में किया जाता है। बहुत ही मनमोहक एवं प्रभावशाली नृत्य था जिसे बालिकाओं ने चित्रित व प्रस्तुत किया। बच्चों का अन्तिम कार्यक्रम एक कव्वाली के रूप में हुआ। इस कव्वाली में बच्चों ने अपनी पढ़ाई–लिखाई की परेशानियां व घर के बड़ों की उनसे बड़ी–बड़ी अपेक्षाओं को गाकर अनेक भाव–भंगिमाओं में प्रस्तुत किया। बच्चों के कार्यक्रमों की समाप्ति पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती उषा नेगी जी द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत एवं धन्यवाद किया गया। उन्होंने कहा कि आपको हमारे विद्यालय के बच्चों के सभी कार्यक्रम पसन्द आये होंगे। आयोजन में उपस्थित श्रोताओं से किसी भी प्रकार के सुधार के लिए उन्होंने सुझाव देने को कहा। उन्होंने बताया कि तपोवन विद्या निकेतन की स्थापना सन् 1988 में हुई थी। देश में लोग आर्यसमाज, वेदों के ज्ञान तथा वैदिक संस्कृति को भूल रहे थे। कुछ निर्धन लोग अपने बच्चों को महंगे व बड़े स्कूलों में पढ़ा नहीं सकते। अतः एक ऐसे विद्यालय की आवश्यकता अनुभव की गई जिसमें वैदिक मूल्यों व सिद्धान्तों की जानकारी सहित बच्चों को सरकारी पाठ्यक्रम की शिक्षा भी दी जाये। उन्होंने कहा कि आज ऐसे स्कूलों की आवश्यकता है जहां बच्चों में नैतिकता व चारित्रिक गुणों का विकास किया जाये। प्रधानाचार्या जी ने कहा कि बच्चों के निर्माण में शिक्षकों सहित माता–पिता का भी योगदान है। उन्होंने माता– पिताओं को अपने बच्चों के क्रियाकलापों का ध्यान रखने को कहा। बच्चे मोबाइल फोनों का दुरुपयोग न करें। आचार्या जी ने कहा कि यदि छोटे बच्चों पर अच्छे संस्कार पड़ेंगे तो वह बाद में बिगडेंगे नहीं। प्रधानाचार्या जी ने कहा कि हमारे स्कूल में अनेक निर्धन बच्चें हैं जिनके अभिभावक उनका शिक्षा शुल्क नहीं दे पाते। आश्रम से जुड़े कुछ लोग इसके लिये आर्थिक सहायता करते हैं। उन्होंने बताया कि श्री सुनील अग्रवाल जी ने सभी 400 बच्चों को ओसवाल ग्रुप के अच्छे ऊनी स्वेटर प्रदान किये हैं। प्रधानाचार्य जी ने स्कूल को सहयोग देने वाले सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। प्राचार्या जी ने बताया कि विद्यालय में बच्चों की संख्या 400 हो गई है। हमारे पास इससे अधिक बच्चों को विद्यालय में प्रवेश देने के लिये साधन

नहीं है। उन्होंने कहा कि ऐसे विद्यालय खुलने चाहियें जहां आर्यसमाज के सिद्धान्तों की शिक्षा के साथ आधुनिक शिक्षा भी दी जाये। उन्होंने बताया कि उनके विद्यालय का परीक्षा परिणाम शत–प्रतिशत रहता है। श्रीमती उषा नेगी जी ने विद्यालय की सभी शिक्षिकाओं का उनको सहयोग देने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने आश्रम से जुड़े विद्यालय के सहयोगियों को भी धन्यवाद दिया।

आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा ने अपने सम्बोधन में विद्यालय की प्रधानाचार्या एवं शिक्षिकाओं को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि आज विद्यालय के बच्चों ने जो कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं वह सभी बहुत अच्छे थे। कार्यक्रम में उपस्थित पूर्व जिला जज श्री इन्द्रजीत मलहोत्रा जी ने बच्चों को पारितोषिक के रूप में दस हजार रुपये प्रदान किये। यह जज साहब इतने विनम्र एवं सज्जन है कि मंच व कुर्सी पर न बैठकर नीचे फर्श पर ही बैठे थे। कार्यक्रम में आये मुख्य अतिथि डॉ० नीरज मोहन जी ने भी बच्चों के लिये दस हजार रुपये प्रदान किये। श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी ने बताया कि हमारे विद्यालय के निकट अनेक विद्यालय चल रहे हैं। हमारे विद्यालय में सबसे अधिक बच्चे हैं। हमारे विद्यालय के बच्चों के शिक्षा के स्तर की सर्वत्र प्रशंसा की जाती है। शर्मा जी ने कहा कि यह सब विद्यालय के स्टाफ के कारण हैं। शर्मा जी ने बताया कि उनके दामाद श्री सुनील अग्रवाल जी ने स्कूल के बच्चों के लिए चार सौ ऊनी स्वेटर दिये हैं। श्री अग्रवाल देहरादून में एक निजी विद्यालय चलाते हैं। श्री प्रेम प्रकाश शर्मा ने बताया कि आश्रम के चैरिटेबल अस्पताल में स्कूल के सभी बच्चों के अभिभावकों को मात्र 50 रुपये प्रतिमाह देने पर पूरे परिवार को अस्पताल से निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श दिया जा रहा है। सभी बच्चों व उनके माता–पिता के लिये हैल्थ कार्ड जारी किये जा रहे हैं। स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि विद्या का क्षेत्र बहुत महत्वपूर्ण है। **'विद्या ददाति विनयं'** का उल्लेख कर उन्होंने कहा कि जिस पेड़ में फल लगते हैं वह झुक जाता है। स्वामी जी ने कहा कि अपनी संस्कृति को बचाकर रखना हमारा कर्तव्य है। इसके बाद कक्षा आठ के विद्यार्थियों को स्वामी जी, मुख्य अतिथि एवं श्री पी.डी. गुप्ता आदि ने स्वेटर वितरित किये।

मुख्य अतिथि डॉ. नीरज मोहन ने अपने उद्बोधन में बच्चों को कहा कि आप मेरे से अच्छे विद्यार्थी हैं। मेरा अपने बारे में यह भ्रम दूर हो गया कि अपने विद्यार्थी जीवन में मैं बहुत अच्छा विद्यार्थी था। मुख्य अतिथि महानुभाव ने पं. नरेशदत्त आर्य जी के भजन की प्रशंसा की। उन्होंने बताया कि आज प्रस्तुत एक कार्यक्रम की प्रस्तुति में रानी लक्ष्मी बाई का नाम सुनकर मैं भावुक हो गया था। हमारी बच्चियां बालकों से अधिक प्रतिभावान हैं। हमें किसी छात्र को कम या किसी को अधिक नहीं आंकना है। **हमारे प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी को चैम्पियन आफ द वर्ल्ड पुरस्कार मिला है। इस पर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की।** प्रकृति के पांच तत्व व पंचभूतों का संरक्षण हमारा उत्तरदायित्व है। सभी आवश्यक पदार्थ परमात्मा ने हमें निःशुल्क दिये हैं। दुनिया के सबसे बड़े आश्चर्य हम खुद हैं। मुख्य अतिथि महोदय डॉ. नीरज मोहन जी ने मानव शरीर की विशेषतायें बताईं। उन्होंने वेदों के शब्दों **'मनुर्भव'** की चर्चा की। उन्होंने आज के आयोजन में भाग लेने के लिये स्वयं को सौभाग्यशाली बताया। उन्होंने कहा कि सन् 1875 में स्थापित आर्यसमाज आज पूरे देश को मार्ग दर्शन दे रहा है। उन्होंने बच्चों को कहा कि मोबाइल का प्रयोग कम करें तथा खेल के मैदान में खेलें। विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत देशभक्ति के कार्यक्रम की उन्होंने सराहना की। विद्यार्थियों को उन्होंने कहा कि वह अपने जीवन में दैवीय, मानवीय व वैदिक धर्म के गुणों को धारण करें। पूरे विश्व व देश में हम नैतिक गुणों का प्रचार करें। उन्होंने कहा कि मैं इस विद्यालय के बच्चों में वह नैतिक गुण देख

रहा हूं जो हमने अपने विद्यालय के दिनों में नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत पढ़े थे। सभी विद्यार्थियों तथा विद्यालय के शिक्षकों सहित सभागार में उपस्थित सभी बन्धुओं का उन्होंने धन्यवाद किया। कार्यक्रम की संचालिका विद्यालय की एक शिक्षिका महोदया ने मुख्य अतिथि के उत्तम सम्बोधन के लिये उन्हें धन्यवाद दिया। स्कूल के दो छात्रों श्री वैभव एवं सचिन टमटा ने शान्ति पाठ कराया। इसी के साथ तपोवन विद्या निकेतन का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के शरदुत्सव के दूसरे दिन रात्रिकालीन सत्संग का आरम्भ भजनों से हुआ। इस सभा में श्री आजाद सिंह लहरी, श्री रमेश चन्द्र स्नेही जी तथा पं. नरेशदत्त आर्य जी के अनेक भजन हुए। कार्यक्रम के संयोजक श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी ने बताया कि कहा जाता है कि कुम्भकरण 6 महीने सोता था और 6 महीने जागता था। उन्होंने कहा कि हम भी तो वर्ष में 6 महीने सोते हैं और 6 महीने जागते हैं। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। सत्यार्थी जी ने कहा कि वर्ष में 12 महीने होते हैं। एक दिन में 12 घंटे का दिन और इतना समय ही रात्रि का माना जाता है। हम वर्ष में कुल 6 महीने जागते हैं और 6 महीने सोते हैं।

आर्य पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री जी ने व्याख्यान आरम्भ करते हुए कहा कि यदि हमारे पण्डितों ने आर्ष ग्रन्थ पढ़े होते तो मुहम्मद गौरी ने सोमनाथ का जो मन्दिर तोड़ा था, वह तो क्या मुहम्मद गौरी एक पत्थर भी न तोड़ पाता। उन्होंने कहा कि हमारे ऋषि सत्य की खोज व अन्वेषण किया करते थे। ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य जीवन के सुख व कल्याण के लिये वेदों का ज्ञान दिया है। सभी को सत्यार्थप्रकाश पढ़ने की विद्वान वक्ता ने सलाह दी। उन्होंने सावधान किया कि अपने भीतर अहंकार को स्थान न दें। उन्होंने कहा कि छोटे व बड़े के लफड़े में जो नहीं पड़ता और उनसे दूर रहता है वही वस्तुतः बड़ा होता है। पं. रणजीत शास्त्री जी ने कहा कि आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन से जीने का आदर्श ढंग आपको मिलेगा। अंग्रेजी भाषा की अनेक विसंगतियां श्री शास्त्री ने उदाहरण देकर बताई। संस्कृत को उन्होंने सर्वोत्तम भाषा बताया। शास्त्री जी गुरुकुल एटा में पढ़े हैं और ब्रह्मचर्य से युक्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं। शास्त्री जी ने कहा कि हमारा ज्ञान हमारी मातृभाषा में होना चाहिये। उन्होंने कहा कि जब जीना ही है तो ढंग से जीओ। दुःख को धैर्य पूर्वक सहन करने से मनुष्य की महत्ता का ज्ञान होता है। उन्होंने सबको संघर्ष एवं पुरुषार्थ करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि विवाह में दुल्हा पीछे रहता है और बाराती आगे चलते हैं। जनाजे में जनाजा आगे होता है और लोग उसके पीछे चलते हैं। उन्होंने कहा कि दुःख पड़ने पर मित्र व सम्बन्धी हमारे पीछे रहते हैं और खुशियों के अवसर पर आगे रहते हैं। विवाहेतर सम्बन्ध पर पिछले दिनों कानून में जो परिवर्तन हुआ है उसका उल्लेख कर उन्होने कहा कि इससे हमारी युवापीढ़ी बिगड़ जायेगी। ऐसी व्यवस्थाओं से युक्त संविधान से किसी का भला होने वाला नहीं है। उन्होंने कहा कि वर्तमान कानून व व्यवस्था में अनेक बातें ईश्वर के ज्ञान वेदों के विरुद्ध हैं। यह कहकर पण्डित रणजीत शास्त्री जी ने अपने व्याख्यान को विराम दिया। इसके बाद पं. सत्यपाल पथिक जी का एक भजन गाया जिसके बोल थे **'हमारे देश की महिमा बड़ी सुहानी है सबसे निराली है सबसे पुरानी है।'**

पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का उपदेश

मुख्य प्रवचन आर्यसमाज के शीर्ष विद्वान, मधुर व सरल भाषा में अपने विषय को समझाने वाले पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का हुआ। अपने उपदेश के आरम्भ में उन्होंने कहा कि **ऋषि वह होता है जो समाधि अवस्था में वेद मंत्रों के रहस्यों को समझता है। ऋषि ऋतम्भरा बुद्धि से युक्त होता है।** उसका मस्तिष्क सत्य से भरा होता है। वह जो बोलता व

लिखता है वह सत्य ही होता है। उसके वचनों में मिथ्या ज्ञान का लेश भी नहीं होता। वह परा व अपरा विद्याओं को भी जानता है। ऋषियों के ग्रन्थों में मिथ्या लेख नहीं होता। अनार्ष ग्रन्थों की चर्चा कर आचार्य कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि इन ग्रन्थों के लेखक ऋषि और ऋतम्भरा बुद्धि वाले नहीं होते। इनके ग्रन्थों में सत्यासत्य दोनों प्रकार की बातें होती हैं। साधारण मनुष्य अनार्ष ग्रन्थों को पढ़कर सत्यासत्य का भेद नहीं कर पाता। आचार्य जी ने अपने एक मित्र के साथ हुए पुराणों में असत्य व अश्लील प्रकरणों पर एक वार्तालाप भी सुनाया और उसके अन्तर्गत शिव, पार्वती, गणेश आदि की मिथ्या कथा का उल्लेख किया। कथा में बताया जाता है कि पार्वती जी ने गणेश को अपने हाथों की मैल से उत्पन्न किया था। शिवजी और गणेश में एक हजार वर्ष तक युद्ध होता रहा और अन्त में उन्होंने अपने त्रिशूल से गणेश का सिर काट दिया। आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने इस पूरी कथा का युक्ति प्रमाणों से खण्डन किया और बताया कि यह ऐतिहासिक सत्य नहीं है अपितु कपोल कल्पित है। उनके मित्र भी उनकी बातों से सहमत हो गये थे।

आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि वेद और 18 पुराणों के ज्ञान में बहुत अन्तर है। आर्यसमाज के सदस्य इस बात को भली प्रकार से समझते हैं परन्तु हमारे पौराणिक भाई और उनके अनुयायी व साधारण जन नहीं समझते। उन्होंने कहा कि बाइबिल व कुरान ग्रन्थ में पृथिवी विषयक जो बातें हैं वह विज्ञान के नियमों के प्रतिकूल हैं। बाईबिल पृथिवी को गतिशील न मानकर स्थिर बताती है। उनके अनुसार पृथिवी सूर्य के चक्कर नहीं काटती। गैलीलियों ने पृथिवी को गतिशील और सूर्य की परिक्रमा का सिद्धान्त दिया तो ईसाईयों के राज्य में उन्हें इस सत्यान्वेषण के लिए 10 वर्ष के कारावास का दण्ड दिया गया। इसी अवधि में वह मृत्यु को प्राप्त हो गये। श्री कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि एक अन्य वैज्ञानिक ने भी पृथिवी के गतिशील होने की पुष्टि की तो उसे भी मिट्टी का तेल डालकर जला कर मार डाला गया था। आचार्य जी ने कहा कि बाइबिल व कुरान में सत्य व असत्य दोनों प्रकार की बातें हैं। उन्होंने कहा कि मुस्लिम वैज्ञानिक भी पृथिवी को गोल व घूमने वाली मानते हैं। **आचार्य कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि वेद की बातें ज्ञान विज्ञान के अनुकूल हैं। वेदों पर आधारित सभी ऋषियों के ग्रन्थ हैं जो सभी सत्य–ज्ञानयुक्त है।** आचार्य जी ने कहा कि वेदानुकूल सिद्धान्त ही प्रामाणिक व मान्य होते हैं और जो वेदानुकूल न हो वह मान्य नहीं होता। आचार्य जी ने कहा कि योग दर्शन के सभी सूत्र सत्य व प्रामाणिक हैं। रात्रि 9.50 बजे शान्ति पाठ हुआ।

शरदुत्सव का तीसरे दिन आचार्य कुलश्रेष्ठ का यज्ञ के महत्व पर प्रवचन

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में प्रातः 6.30 बजे से यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ। यज्ञ के बाद पं. सत्यपाल पथिक जी के गाये भजन के शब्द थे **'यह यज्ञ पुराने भारत का गौरव दर्शाने वाला है'।** इसके बाद आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का प्रवचन हुआ। आचार्य जी ने यज्ञ में मौन आहुति की चर्चा की। आचार्य जी ने कहा कि एक बार वाणी और मन में बहस हुई। दोनों ने अपने आप को बड़ा बताया। दोनों ने अपने–अपने पक्ष में प्रमाण दिये परन्तु विवाद समाप्त नहीं हुआ। दोनो निर्णय कराने के लिये प्रजापति के पास गये। उनके सम्मुख भी दोनो ने अपने अपने तर्क प्रस्तुत किये। वाणी ने कहा कि वह ईश्वर का वर्णन करती है। वेद मन्त्रों को बोलती है। यज्ञ के ब्रह्मा जी को कोई निर्देश देना होता है तो वह वाणी से बोलकर ही देते हैं। वाणी में ही सत्संगों में उपदेश व प्रवचन भी होते हैं। यदि वाणी न बोले, तो यज्ञ नहीं हो सकता। मन ने प्रजापति को कहा कि जब तक आत्मा व वाणी के मध्य मन युक्त न हो वाणी बोल नहीं सकती। विद्वान वक्ता ने बताया कि वाणी जिन शब्दों को बोलती है वह आकाश का गुण हैं। शब्दोच्चार में आकाश का भी महत्व है। परमात्मा आकाश से भी महान है। ऐसी बातें बता

कर मन ने स्वयं को बड़ा बताया। उसने कहा कि वह योग व ईश्वर के साधक को परमात्मा तक पहुंचाता है। प्रजापति ने वाणी को मन को बड़ा मानने के लिये कहा। वाणी सन्तुष्ट नहीं हुई। **उसने प्रजापति को कहा कि यज्ञ में जब प्रजापति के लिये आहुति आयेगी तो वह अर्थात् वाणी बोलेगी नहीं, वह मौन रहेगी।**

आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि मन की एकाग्रता का परिणाम ध्यान है। मन आत्मा का प्रमुख साधन है। मन जड़ है। आत्मा की चेतना से मन क्रियाशील होता है। मन को साधने की जरूरत है। मन सात्विक, राजसिक व तामसिक गुणों वाला होता है। सात्विक मन पाप नहीं करता। मन राजसिक गुणों से युक्त होता है तो पाप करता है। आचार्य जी ने इसका एक उदाहरण दिया। एक व्यक्ति सत्संग में गया। उसकी चप्पल पुरानी थी। वहां उसने नई चप्पल देखी। उसे लोभ आ गया। उसने चप्पल चोरी कर ली व घर चला गया। वहां मन ने उसे धिक्कारा। तूने चोरी की। चोरी करना अधर्म व पाप है। उसके सात्विक भाव जाग गये। वह पुनः सत्संग के स्थान पर आता है और चप्पल छोड़ जाता है।

आचार्य जी ने धर्म व सत्संग प्रेमियों को कहा कि आप अपने मन को सात्विक व पवित्र बनाये रखो। आचार्य जी ने सात्विक व तामसिक मन का एक और उदाहरण दिया। उन्होंने कश्मीर के राजा गुलाब सिंह जी की घटना सुनाई। उन्होंने कहा कि एक दिन प्रातःकाल भ्रमण करते हुए उनकी दृष्टि एक युवती पर पड़ी तो उनके मन में कुछ विकार आ गया। बाद में मन में सात्विक विचार आये तो उन्होंने सोचा कि प्रजा तो राजा के पुत्र व पुत्रियों के समान होती है। उन्होंने अपने आप को धिक्कारा। राज पुरोहित को बुलाकर स्थिति बताई और उसका दण्ड व पश्चाताप पूछा। राजा ने इस घटना में राज पुरोहित को अपना नाम नहीं बताया। **राज पुरोहित ने कहा कि इसका प्रायश्चित तो चिता में जलकर मृत्यु को प्राप्त कर ही हो सकता है।** राजा ने पुरोहित को कहा कि वह व्यक्ति मैं ही हूं। इससे राज पुरोहित व प्रजा पर चिन्ता के भाव उत्पन्न हुए। राजा के अनुग्रह पर चिता बनाई गई। अग्नि प्रज्जवलित हो गई। राजा चिता में कूदने के तैयार खड़े हैं। राजा के कूदने का अवसर आते ही राज पुरोहित ने राजा का हाथ खींचकर राजा को कहा कि आपका प्रायश्चित हो गया। राज पुरोहित ने कहा कि आपके मन ने पाप किया था। आपके मन को चिता दिखा कर दग्ध कर दिया गया है। इस प्रकार राजा की जान बची। आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि मन बड़ा चंचल है। मन को साधे बिना जीवन सफल नहीं हो सकता। मन की एकाग्रता स्थापित होने पर ही सफलता प्राप्त होती है। जीवन में मन की एकाग्रता बहुत महत्वपूर्ण है।

आचार्य जी ने कहा कि गीता में कृष्ण अर्जुन संवाद में कृष्ण जी कहते हैं कि रजोगुण से उत्पन्न काम, क्रोध, मद, मोह आदि मनुष्य से पाप कराते हैं। उन्होंने मन की साधना करने को कहा। मन को पवित्र विचारों से युक्त करो तो यह पाप से पृथक रहेगा। **आचार्य जी ने कहा कि यदि हमारा अन्न व भोजन पवित्र होगा तो मन पवित्र होगा। मन की पवित्रता के लिये आप पुरुषार्थ व धर्मपूर्वक धन अर्जित करो। उस अर्जित धन से अन्न वा भोजन प्राप्त करो। अधर्म से धन मत कमाओ। पवित्र अन्तःकरण वाला मनुष्य ही साधना में आगे बढ़ता है। संसार में यश प्राप्ति के लिये आप शुद्ध अन्न का सेवन करो।** आचार्य जी ने मन की चचंलता से सम्बन्धित स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती जी के जीवन की एक कथा भी सुनाई। उन्होंने कहा कि एक बार वह बाजार से गुजर रहे थे। रबड़ी की दुकान पर रबड़ी देख कर उनका मन उस पर झुक गया। उन्होंने मन को समझाने का प्रयास किया। अन्ततः वह रबड़ी की दुकान पर पहुंच गये। उन्होंने 10 रुपये की रबड़ी ली। वहां पास में रेत पड़ा था। उन्होंने

रबड़ी में कुछ रेत मिला दिया। अब रबड़ी खाने लगे तो रेत के कारण वह खाई न जा सकी। इस प्रकार से स्वामी सर्वदानन्द जी ने अपने मन को शिक्षा दी। आचार्य जी ने कहा कि स्वामी जी ने अपने मन को कहा कि तूने मेरी किरकरी की और मैंने तेरी किरकरी की। **आचार्य जी अपने उपदेश में कहा कि मन को गिरावट में जाने से रोकना चाहिये।**

आचार्य जी ने कहा कि गीता कहती है कि शरीर, वाणी व मन का तप करो। मन प्रसन्न रहना चाहिये। मन में बुरे विचार पैदा न हो। वाणी का सदुपयोग करो। हम जो शब्द बोलते हैं, वह भी ब्रह्म है। वाणी का उपयोग तप के रूप में हो। हम अपने हाथ व पैरों से बुरे काम न करें। हम कुसंग में न जायें। तीनों तप करने से मनुष्य साधना में आगे बढ़ता है। समय हो गया था अतः आचार्य जी ने यहीं पर अपने व्याख्यान को विराम दिया।

आश्रम द्वारा संचालित तपोवन विद्या निकेतन विद्यालय के बच्चों को आश्रम के प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी की ओर से छात्रवृत्तिया दी जाती हैं। नर्सरी से कक्षा आठ तक के उन छात्रों को जो अपनी कक्षा में प्रथम, द्वितीय व तृतीय आते हैं, क्रमशः 175, 150 तथा 100 रुपये मासिक की छात्र वृत्ति दी जाती है। आज सभी विद्यार्थियों को 6 माह की छात्रवृत्ति की धनराशि बांटी गई। यह भी बता दें कि इस विद्यालय का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहता है। विद्यालय में 400 विद्यार्थी हैं। अधिकांश विद्यार्थी गरीब परिवारों के हैं। बच्चों को वैदिक सिद्धान्त व यज्ञ आदि की शिक्षा भी जाती है। बच्चें यज्ञ व सत्संग में बैठते हैं। आश्रम बच्चों को चिकित्सकीय सुविधायें भी देता है। स्कूल की भूमि व भवन आदि की अपनी विवशताओं के कारण बहुत से बच्चों को प्रवेश नहीं मिल पाता। इस विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती उषा नेगी जी ने इस स्कूल को अल्प वेतन लेकर भी उन्नति के शिखर पर पहुंचाया है, अतः वह बधाई की पात्र हैं। उनकी सभी शिक्षिकायें और कर्मचारी भी अपनी सेवाओं के लिये बधाई के पात्र हैं। शान्तिपाठ के साथ प्रातःकालीन यज्ञ एवं सत्संग सम्पन्न हुआ।

उत्सव के तीसरे दिन 'महिला–सम्मेलन' का आयोजन

आधुनिक शिक्षा नारी को विलासिता की ओर ले जाती हैः पं. उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ

आश्रम के उत्सव के तीसरे दिन दिनांक 5 अक्टूबर, 2018 को दिन के 10 बजे से 1.00 बजे तक महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन आर्यसमाज के कीर्तिशेष विद्वान महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी जी की सुपुत्री माता श्रीमति सुरेन्द्र अरोड़ा जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में पं. नरेश दत्त आर्य तथा पं. सत्यपाल पथिक जी के भजन भी हुए। मुख्य सम्बोधन आर्य विद्वान आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का हुआ। अपने सम्बोधन के आरम्भ में श्री उमेश चन्द्र जी ने कहा कि **ऋषि दयानन्द महिलाओं के लिए जिस प्रकार की शिक्षा चाहते थे वह उन्हें नहीं मिल पायी।** उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द महिलाओं को वेदों के अनकूल शिक्षा देना चाहते थे। यदि ऐसा होता तो उनके बच्चे वैदिक संस्कारों को धारण करते और देश में वेद, वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रचार होता। विद्वान **आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि आधुनिक शिक्षा नारी को विलासिता की ओर ले जाती है।** उन्होंने कहा कि **देश में नारी को भोग की वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उन्होंने दुःख भरे शब्दों में कहा कि नारी जो संसार की मां है, उसे वेदों के अनुकूल गरिमामय रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता।**

आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने आगे कहा कि आज की नारी होटलों में जाती है, वहां परपुरुषों के साथ नृत्य वा डांस करती है। किट्टी पार्टी, शराब पार्टी आदि में भी वह सम्मिलित होती है। आजकल इसे बुरा नहीं माना जा रहा है जबकि यह ईश्वरीय ज्ञान वेदों के

सर्वथा प्रतिकूल व विरुद्ध है। आचार्य जी ने भारत की विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज जी का उल्लेख कर कहा कि वह विदेशी प्रतिनिधि मण्डल के पुरुष सदस्यों से हाथ मिलाती हैं। भारतीय वैदिक संस्कृति इसे बुरा एवं वर्जित कर्म मानती है। वेदों व वैदिक साहित्य में अभिवादन के लिये हाथ जोड़ कर नमस्ते का विधान है परन्तु धर्म व संस्कृति की बातें करने वाले हमारे राजनेताओं को न तो इसका ज्ञान है न ही परवाह है। **आचार्य जी ने कहा कि इन सब बुराईयों का कारण हमारे देश की नारियों का वैदिक शिक्षा से दूर होना है।** आचार्य जी ने दिल्ली के प्रसिद्ध मिराण्डा कालेज का उल्लेख कर बताया कि इस कालेज में देश के धनवानों के लड़के व लड़कियां पढ़ती हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार यहां कि 75 प्रतिशत लड़कियों को नशे की आदत है। नशीले पदार्थ उन्हें स्कूल के बाहर ही प्राप्त हो जाते हैं। यह तथ्य एक पत्रिका में प्रकाशित रिपोर्ट में सामने आया है। **आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने पूछा कि क्या इनसे उत्तम सन्तानें उत्पन्न हो सकती हैं? उन्होंने कहा कि भोजन व खाने की वस्तुओं से ही मनुष्य के शरीर में रज व वीर्य बनता है। इन नशा करने वाले माता व पिताओं की सन्तानें भी उन्हीं के संस्कारों की उत्पन्न होंगी। उनसे धर्मात्मा व संस्कारी सन्तान उत्पन्न करने की आशा नहीं की जा सकती।**

आचार्य जी ने कहा कि आजकल की पढ़ाई व दिशा गलत है। आजकल की शिक्षा भारतीय वैदिक संस्कृति की मान्यताओं व सत्य सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। आजकल के छात्र सन्ध्या व यज्ञ को नहीं मानते। उनका मानना है कि सन्ध्या व यज्ञ करने वाले पिछड़े हुए विचारों के हैं और वह शराब व मांस आदि के सेवन करने वाले प्रगतिशील विचारों के हैं। उन्होंने देश व आर्यसमाज के विद्वानों से इस पर विचार करने को कहा। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज की महिलाओं का एक प्रतिनिधि मण्डल विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज से मिलना चाहिये और उनसे विदेशी व स्वदेशी पुरुषों से हाथ न मिलाने का अनुरोध करना चाहिये।

आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के गुणों व कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि मोदी जी गुणवान है। हमें उन पर गर्व है। वह भी विदेशी महिलाओं से नमस्ते न करके हाथ मिलाते हैं। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी को छोड़ा हुआ है, उन्हें साथ नहीं रखते और दूसरे मतों की महिलाओं के कल्याण के लिये काम कर रहे हैं। तीन तलाक पर वह कानून बना रहे हैं। तलाक के कानून से हमारा विरोध नहीं है। उन्होंने कहा कि मोदी जी की पत्नी की भी तो भावनायें हैं। **हमारे नेता कहते हैं कि वह भारतीय संस्कृति की रक्षा कर रहे हैं। मैं इस बात को समझ नहीं पा रहा हूं कि वह किस प्रकार से भारतीय संस्कृति की रक्षा कर रहे हैं।** आचार्य जी ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम के छोटे भाई लक्ष्मण जी की पत्नी उर्मिला और भगवान बुद्ध की पत्नी वसुन्धरा की चर्चा की और कहा कि इनकी पत्नियों को उम्मीद थी कि उनके पति लौटेंगे और उन्होंने अपने पतियों की प्रतीक्षा भी की थी। **आचार्य जी ने महिला व पुरुष श्रोताओं को कहा कि आप जिस बात को अनुचित समझते हो उसके लिये सम्बन्धित व्यक्ति, नेता व अधिकारी को पत्र लिखा करें। हम किसी व्यक्ति से पक्षपात व कटुता नहीं रखते।** हमारे गुण व कार्य ऐसे होने चाहिये जिनसे नई पीढ़ी व बच्चों पर अच्छा प्रभाव पड़े। सरकार की नीतियों के कारण हमारा सब काम चौपट हो जाता है।

आचार्य जी ने कहा कि विदेशी संस्कृति हमारे घरों में पूरी तरह से प्रविष्ट हो चुकी है। टीवी का प्रचलन, स्त्री पुरुषों की वेशभूषा में दिन प्रति दिन परिवर्तन, सुधार के स्थान पर बिगाड़ आदि से हम अपनी संस्कृति से बहुत दूर चले गये हैं। आचार्य जी ने कहा कि हमें नारी उत्थान व भारतीय संस्कृति से जुड़े सभी मुद्दों पर विचार करना चाहिये। **अपने वक्तव्य को विराम देते हुए विद्वान वक्ता ने कहा कि**

हमारी समझ में नहीं आ रहा है कि हमारे देश में कौन सी संस्कृति विकसित हो रही है और इसके देश व समाज पर क्या परिणाम होंगे? आचार्य जी का प्रवचन सबसे अन्त में हुआ। समयाभाव के कारण उन्हें 10 मिनट का समय ही दिया गया और इस सीमित समय में उन्होंने सारगर्भित प्रभावशाली उपदेश किया।

इससे पूर्व सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान पं. सत्यपाल पथिक जी ने गायत्री मन्त्र पर आधारित स्वरचित एक प्रभावशाली भजन सुनाया जिसके बोल थे **''वरदायिनी हे गायत्री माता गुणगान तेरा संसार गाता''।** पथिक जी ने भी विस्तार से नारी सम्मेलन में नारियों से सम्बन्धित अपने विचार व्यक्त किये। पथिक जी से पूर्व आर्य विदुषी तथा डीएवी महाविद्यालय में संस्कृत विभाग की प्रोफेसर डा. श्रीमती सुखदा सोलंकी का व्याख्यान हुआ। उन्होंने कहा कि संस्कृत में गृहस्थ जीवन का व्यापक अर्थ है। उन्होंने महाराज दुष्यन्त व शकुन्तला के विवाह तथा विदाई के अवसर पर ऋषि कण्व के वचनों को भी सुनाया। उन्होंने कहा कि ऋषि कहते हैं कि सन्तान ऐसी उत्पन्न करना जिसका यश युगो–युगों तक विद्यमान रहे। विदुषी सुखदा सोलंकी जी ने कहा कि बच्चा अच्छाई देखता है तो अच्छाई और बुराई देखता है तो बुराई ग्रहण करता है। उन्होंने कहा कि बिना बच्चों को संस्कारवान् बनाये वह संस्कारित नहीं हो सकते। बनाने से बनते हैं और न बनाने से कोई संस्कारवान् नहीं बनता। बहिन जी से पूर्व प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक पं. नरेश दत्त आर्य जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये और नारी गौरव से सम्बन्धित एक प्रभावशाली गीत प्रस्तुत किया। उनके द्वारा प्रस्तुत गीत की प्रथम पंक्ति थी **'यदि इन देवियों में वेदों का प्रचार हो जाये तो बेड़ा डूबता भारत का पल में पार हो जाये।'** उन्होंने कहा कि विवाह संस्कार सद्गृहस्थी बनाने का प्रशिक्षण है तथा मनुष्य को प्रशंसा अपनी अच्छी लगती है और बुराई दूसरों की अच्छी लगती है। कार्यक्रम को एम.टैक. की एक छात्रा कु. जागृति ने भी सम्बोधित किया और ऋषि दयानन्द के नारी उत्थान के कार्यों के लिये उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम गायत्री मन्त्र से आरम्भ हुआ था। श्रीमती प्रोमिला आर्या एवं अनेक बहिनों ने इस कार्यक्रम में गीत व भजन प्रस्तुत किये। महिला सम्मेलन की संयोजिका श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी ने कहा कि समाज के अन्दर कुरीतियों को दूर करने के लिये हमें जागृति लानी होगी। आजकल की नारियों में सहनशीलता नहीं है। आज हम स्वतन्त्र हो गये हैं और समझते हैं कि हम जो चाहें करें। हम सामाजिक मर्यादाओं का ध्यान भी नहीं रखते। आज कल के युवा इच्छानुसार विवाह के बन्धन तोड़ते और बांधते रहते हैं। हमें गृहस्थ आश्रम को स्वर्ग बनाना है। इसके लिये हमें अपने व दूसरों के जीवन को सुधारना होगा। उन्होंने कहा कि माता का दर्जा बहुत ऊंचा है। हमें स्वयं को मर्यादा में रखना होगा। तपस्वी जीवन जीनें से जीवन चमकता है। अग्नि में पड़ने से जीवन कुन्दन बनता है। सद्ज्ञान व पुरुषार्थ ही वह अग्नि है जिससे हमारा जीवन कुन्दन बनेगा। इसके साथ ही महिला सम्मेलन का समापन हो गया।

आर्यसमाज ने देशवासियों में स्वाभिमान जगाया है:

आश्रम के शरदुत्सव के तीसरे दिन रात्रि सभा में विद्वानों ने राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में वेद और आर्यसमाज का योगदान विषय पर विद्वानों के प्रवचन एवं भजन हुए। मुख्य व्याख्यान आर्यजगत् के उच्च कोटि के विद्वान आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का हुआ। उन्होंने कहा कि वर्तमान में देश में जन्मना जातिवाद, आतंकवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद आदि अनेक समस्यायें हैं। **उन्होंने कहा कि मेरी दृष्टि में देश की प्रमुख समस्या देश के नागरिकों में स्वाभिमान का अभाव है।** आचार्य जी ने 17 जून सन् 2000 को नेपाल से उड़ान भरने के बाद आतंकवादियों

द्वारा भारत के विमान के अपहरण की चर्चा की। उन्होंने कहा कि 3 आतंकियों ने 162 यात्रियों वाले विमान का अपहरण किया था। आतंकियों ने वायुयान के पाइलटों को विमान को कन्धार ले जाने का आदेश दिया। हमारे पायलटों ने विमान के अपहरण के बारे में भारत सरकार को बताया। आचार्य जी ने कहा कि उन दिनों श्री अटल बिहारी वाजपेई जी की सरकार थी। श्री लाल कृष्ण अडवानी जी व श्री जसवन्त सिंह आदि वरिष्ठ मंत्री थे। सरकार की ओर से विमान के पायलट को कोई दिशा निर्देश न मिला। पायलटों ने आतंकवादियों को झांसा देने के लिये कहा कि विमान का ईधन खत्म हो गया है। आतंकवादियों ने विमान को अमृतसर में उतारने व ईंधन लेने की इजाजत दी। अमृतसर में हमारा विमान 45 से 58 मिनट तक खड़ा रहा। वहां भारत सरकार की ओर से कोई कार्यवाही नहीं की गई। अतः विमान अमृतसर से उड़ कर कन्धार पहुंच गया। सकुशल कन्धार पहुंचकर आतंकवादियों ने भारत सरकार को सन्देश दिया कि उनके 37 आतंकवादी साथियों को कन्धार भेज दो। उन्होंने करोड़ो रुपयों की भी मांग की। हमारे विदेश मंत्री 37 आतंकी और करोड़ों रुपया लेकर कन्धार पहुंचे और अपने यात्रियों व विमान को मुक्त करा लिया। इसके बाद विमान यात्रियों सहित भारत आ गया। विदेश मंत्री के साथ कन्धार गये भारत के दो पत्रकारों ने वहां के पत्रकारों से बातचीत की। उन्होंने अफगानी पत्रकारों को खाली समय में कन्धार का कोई प्रसिद्ध स्थान दिखाने को कहा। वह उन्हें एक स्थान पर ले गये। वहां एक मजार बनी हुई थी। मजार के पास एक बड़ा जूता रखा था। वहां एक कार आई। उसके यात्री उतरे और मजार पर गये। उन्होंने उस मजार पर पांच–पांच जूते मारे। फिर दूसरी कार आई उसमें से भी सभी यात्री उतरे और उन्होंने भी पहले वाली प्रक्रिया अपनाई। पूछने पर बताया गया कि यह भारत के सम्राट पृथिवी राज चौहान की मजार है। यह जूते पृथिवी राज चौहान को लगाये जाते हैं।

आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि आप इस घटना पर विचार करें। हमारे यशस्वी सम्राट पृथिवीराज चौहान ने 17 बार मुहम्मद गौरी को हराया था और उसके माफी मांगने पर छोड़ दिया था। मुहम्मद गौरी ने एक अवसर मिलने पर ही पृथिवीराज चौहान जी की दोनों आंखे फुड़वा दी। कवि चन्द्र वरदाई पृथिवीराज चौहान का कवि था। सम्राट पृथिवीराज चौहान को शब्द भेदी बाण चलाना आता था। चन्द्र वरदाई ने पृथिवी राज चौहान से बात की और उसके बाद मुहम्मद गौरी को पृथिवी राज चौहान की शब्द भेदी बाण चलाने की कला को देखने का प्रस्ताव किया। मुहम्मद गौरी एक ऊंचे स्थान पर बैठा। जिस लक्ष्य पर तीर चलाना था वह नीचे था। जब पूरी तैयारी हो गई तो चन्द्र वरदाई ने राजस्थानी हिन्दी में कुछ शब्द कहे जिसमें मुहम्मद गौरी के बैठने के स्थान, दिशा, ऊंचाई आदि का उल्लेख था। पृथिवीराज चौहान ने शब्द भेदी बाण छोड़ा जो मुहम्मद गौरी के सीने में लगा और वह मर गया। आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि कन्धार की कब्र का उपर्युक्त समाचार उन्होंने श्री शिवानन्द क्रान्तिकारी से सुना था। यह समाचार दैनिक जागरण के 20 जून 2000 के अंक में भी छपा था। **आचार्य जी ने दुःख भरे शब्दों में कहा कि हमारी सरकार अफगानिस्तान की सरकार को यह नहीं कह पा रही है कि इस दुष्प्रथा को बन्द करो। विद्वान आचार्य ने कहा कि यह हिन्दुओं में स्वाभिमान के न होने का उदाहरण है।** आचार्य जी ने पूछा कि हम कहां हैं। हम चैक अंग्रेजी में भरेंगे। दुकान के बोर्ड अंग्रेजी में लगायेंगे। क्या हमारा ऐसा करना देशहित में है? **आर्यसमाज ने देशवासियों का स्वाभिमान जागृत किया। यदि आर्यसमाज न होता तो आज जो स्थिति है वह भी न होती। इतना होने पर भी हम सतर्क नहीं है यह बड़े दुःख की बात है।**

आचार्य जी ने दक्षिण के राज्यों मुख्यतः कर्नाटक में देवदासी प्रथा का उल्लेख किया।

वहां यह अन्ध परम्परा व मान्यता प्रचलित है कि यदि गृहस्थी अपनी पुत्री को देवदासी बना देंगे तो उनकी मुक्ति हो जायेगी। लोग अपनी लगभग 13 वर्ष व उससे कुछ अधिक उम्र की लड़कियों को देवदासी बनाते हैं। उन पुत्रियों का देवी की पत्थर की मूर्ति से विवाह कराते हैं और मंगल सूत्र भी देते हैं। इस आयोजन में पण्डे पुजारियों सहित गणमान्य लोग भी आते हैं। लड़की का विवाह पत्थर की मूर्ति से करते हैं। वेद में इस प्रकार के विवाह का विधान व कोई मन्त्र नहीं है। **उन्होंने कहा कि अधर्म को धर्म मानकर यह व्यवहार हो रहे हैं।** आचार्य जी ने कहा कि जब यह देवदासियां प्रौढ़ हो जाती हैं तो उनको निकाल दिया जाता है। उनके परिवारजन व अन्य हिन्दू उन लड़कियों को नहीं अपनाते। वह अन्धविश्वासी हैं, इसलिये डरते हैं। मुसलमान व ईसाई इन लड़कियों को ले जाते हैं। इनसे बच्चे पैदा करते हैं जो हमारी धर्म व संस्कृति के विरोधी व शत्रु होते हैं। **आश्चर्य है कि हमारे धर्माचार्य इस पर चुप्पी साधे रहते हैं। इन्हें धर्माचार्य कहना भी इस शब्द का अपमान प्रतीत होता है। उन्होंने कहा कि हिन्दुओं को धर्म व अधर्म की पहचान नहीं है।**

विगत 143 वर्षों में आर्यसमाज ने बहुत से पापों को दूर किया है। उन्होंने कहा कि आपके धर्म व संस्कृति को मानने वाले परिवार की लड़की मुसलमान बन गई व ईसाई बनाई जाती है। उनके बच्चे होते हैं और हमारे प्रति शत्रुता का भाव रखते हैं। **आचार्य जी ने कहा कि हिन्दुओं की मूर्खता उच्च कोटि की मूर्खता है।** हिन्दू इन बहिनों को अपने घर में सफाई आदि का काम देने को भी तैयार नहीं है। आचार्य जी ने कहा कि बड़े–बड़े नेता व अधिकारी गंगा की पूजा करने जाते हैं। गंगा एक नदी है। इसमें जल बहता है। इस जल की नदी गंगा की भी मूर्ति बना दी गई है। हमारे नेता गंगा की आरती उतारते हैं। इसके परिणाम से नेता अनभिज्ञ रहते हैं। **गंगा की पूजा का अर्थ आरती उतारना नहीं अपितु गंगा को स्वच्छ रखना है जिससे लोग इस जल को पी सकें और इससे सिंचित जल से गुणवत्ता वाला अन्न उत्पन्न हो सके। आचार्य जी ने कहा कि धर्म का यह तमाशा भारत में है।**

तुलसीदास जी रामायण में परहित को धर्म तथा परपीड़ा को अधर्म कहते हैं। उनके अनुसार दूसरों को पीड़ा देना अधर्म है। मांसाहार के लिये हमारे देश के लोग पशुओं को काटते हैं। उस पशु को दुःख होता है इसकी परवाह पशु काटने व मांस खाने वाले नहीं करते। आचार्य जी ने कहा कि तुलसी दास जी के अनुसार पशुओं को दुःख देकर उनका मांस प्राप्त करना अधर्म व पाप है। **आचार्य जी ने आगे कहा कि हमारे सनातनधर्मी पौराणिक बन्धु धर्म को नहीं जानते।** खाद्य व अन्नादि पदार्थों में मिलावट से होने वाली हानियों पर भी आचार्य कुलश्रेष्ठ जी ने विस्तार से प्रकाश डाला। भ्रष्टाचार पर भी विद्वान वक्ता ने कटाक्ष किये। मिलावटी खाद्य पदार्थों को खाकर हमारे मजदूर व गरीब लोग बीमार होकर मर जाते हैं। आचार्य जी ने पिछले दिनों दिल्ली के आसपास निर्माणाधीन एक वृहद भवन के गिर जाने की चर्चा कर बताया कि वहां 20 बोरी रेत व बजरी में 1 बोरी सीमेंट मिलाया गया था। **पौराणिक सोचते हैं कि वह मन्दिर में भण्डारा या दान कर देंगे जिससे उनके पाप दूर हो जायेंगे। उनका यह विचार सर्वथा मिथ्या हैं। ऐसे मिथ्या कर्म करने वाले सभी लोगों को अपने पापों के फल अवश्यमेव भोगने होंगे। कोई पाषाण देवता या पण्डा पुजारी किसी को पाप का दण्ड भोगने से बचा नहीं सकता।**

आचार्य कुलश्रेष्ठ जी से पूर्व आश्रम के धर्माधिकारी पं. सूरत राम शर्मा जी का सम्बोधन हुआ। उन्होंने देश के सामने प्रमुख समस्याओं की चर्चा की। अलगाववाद, आतंकवाद, जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद को उन्होंने देश की प्रमुख समस्यायें बताया। विद्वान् वक्ता ने कहा

कि आज देश की विविधता ही देश के लिये अनेक समस्यायें खड़ी कर रही है। सम्प्रदायवाद की चर्चा कर उन्होंने **'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना'** की चर्चा की और कहा कि मजहब ही बैर रखना सिखाता है। उन्होंने पूछा कि क्या मजहब धर्म सिखाता है? **पं. सूरतराम शर्मा जी ने कहा कि हमारे देश के कर्णधारों ने मत को ही धर्म समझ लिया है।** यह लोग धर्म के स्वरूप को जानते ही नहीं है। विद्वान आचार्य ने कहा कि भारत धर्मनिरपेक्ष देश है। धर्मनिरपेक्षता में धर्म की आवश्यकता ही नहीं समझी जाती। उन्होंने कहा कि पुराने समय में राजा भी अपने राज्य में धर्माचार्य रखते थे। देश आजाद हुआ तो नेताओं ने धर्म को नकार दिया। **उन्होंने कहा कि धर्मनिरपेक्ष राज्य एक बड़ी विडम्बना है।** धर्म तो श्रेष्ठ गुणों को धारण करने का नाम है। क्या हमारे देशवासियों को सद्‌गुणों को धारण करने की आवश्यकता नहीं है?

आर्यसमाज के शीर्ष भजनोपदेशक पं. नरेशदत्त आर्य ने भजन प्रस्तुत करते हुए पहला भजन गाया जिसके बोल थे **'ऋषि ने जलाई है जो दिव्य ज्योति, जहां में सदा यूं ही जलती रहेगी।'** उनके दूसरे भजन के बोल थे **'एक तरफ बेईमानी, नहीं किसी को चिन्ता है आर्यसमाज को परेशानी।'** आर्यसमाज के सर्वाधिक लोकप्रिय भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक जी ने भी एक भजन गाया। भजन के बोल थे **'युग युग जीये मेरा प्यारा आर्यसमाज, हाथ में लेकर ओ३म् पताका करे दिलों पर राज, युग–2 जीवे मेरा प्यारा आर्यसमाज।'** पं. नरेश दत्त आर्य जी के सुपुत्र श्री नरेन्द्र दत्त आर्य ने एक भजन **'आने से इसमें बदले विचार सद्‌विचारों से रहता है सुखी इंसान, बड़ी ही सुहानी है यह आर्यसमाज'।** इस भजन पर ढोलक वादन श्री नरेन्द्र दत्त आर्य जी के पिता पं. नरेशदत्त आर्य जी ने किया। यह अद्‌भुद दृश्य था जब एक युवा पुत्र भजन गा रहा था और उसका पिता आर्यसमाज का शीर्ष भजनोपदेशक ढोलक बचा रहा था। ऐसे कई अवसर तपोवन आश्रम में देखने को मिले। इनसे पूर्व श्री आजाद सिंह आर्य जी ने भी एक भजन **'जब यह संसार तुमको तन्हा छोड़ दे उस प्रभु की शरण में चले आईये'** गाया। रात्रि 10.00 बजे कार्यक्रम शान्ति पाठ के साथ सम्पन्न हुआ।

शरदुत्सव का चतुर्थ दिवस–आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ का उपदेश

आश्रम के शरदुत्सव के चौथे दिन का प्रातःकालीन आयोजन प्रातः 5.00 बजे से योगासन एवं ध्यान आदि से आरम्भ हुआ। प्रातः 6.30 बजे से यजुर्वेद पारायण यज्ञ वैदिक साधन आश्रम तपोवन की पर्वत एवं वनों से घिरी ईकाई में सम्पन्न किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी थे। यज्ञ के बाद भजन एवं प्रवचन हुए। मुख्य प्रवचन आगरा से पधारे विद्वान आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का हुआ। अपने प्रवचन में श्री कुलश्रेष्ठ जी ने दान के दार्शनिक महत्व पर प्रकाश डाला। हम दान क्यों दें, इस विषय में वेद क्या कहता है? आदि की चर्चा विद्वान वक्ता ने की। उन्होंने कहा कि युवापीढ़ी से शुभ कार्यों में दान देने की बात करते हैं तो उनका उत्तर होता है कि हम मेहनत करते हैं। 12 घंटे काम करते हैं और आप कहते हैं कि हम जो धन कमाते हैं उसमें से हम दान किया करें। विद्वान वक्ता ने कहा कि दान के विषय में वेदों का आदेश है कि हमें दान करना चाहिये। आचार्य जी ने ऋग्वेद के एक मन्त्र का उच्चारण किया। उन्होंने कहा कि हम आज का दिन देख रहे हैं परन्तु हमें आने वाले इस जन्म के शेष दिन और मृत्यु के बाद की अवस्था का ज्ञान नहीं है। क्या किसी ने उन्हें देखा है? किसी ने नहीं देखा। सभी लोग आने वाले दिनों में सुखी रहना चाहते हैं। इसका उपाय वेद बताता है कि सभी को दान करना चाहिये। यदि आपके पास कोई याचक आ जाये तो उसकी उचित आवश्यकताओं को पूरा किया कीजिए। आचार्य जी ने दान व सुख की चर्चा की और इससे सम्बन्धित एक ऋग्वेद के

मन्त्र का उच्चारण किया। ईश्वर कहता है कि निश्चय से इस संसार के समस्त धनों का स्वामी वही है। हम संसार में नया सामान बनाते हैं। इस नये सामान में जिन पदार्थों का प्रयोग किया जाता है वह मिट्टी, जल, वायु, सूर्य का प्रकाश व गर्मी आदि सब ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में बनाकर हमें प्रदान किए हैं। यदि ईश्वर ने सृष्टि न बनाई होती और हमें जन्म न दिया होता तो हम कुछ नहीं कर सकते थे। आचार्य जी ने कहा कि संसार में जो मूल पदार्थ विद्यमान हैं उनका स्वामी परमात्मा ही है अन्य कोई नहीं है। परमात्मा सर्वशक्तिमान है और वही सब पदार्थों व धनों का स्वामी है। आचार्य जी का दान व्याख्यान पर्याप्त लम्बा है। स्थानाभाव के कारण हम उसे नहीं दे पा रहे हैं।

आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी से पूर्व पं. नरेश दत्त आर्य जी के कई भजन हुए। उनका एक भजन था **''स्वच्छता सफाई का ध्यान कीजिये मानवता की रक्षा का सामान कीजिये।''** पंडित जी ने उदाहरण देकर बताया कि पढ़े लिखे अधिक गन्दगी करते हैं। उन्होंने बताया कि एक समाचार पत्र में उन्होंने पढ़ा कि यदि इसी प्रकार से व्यवस्था चलती रही तो आने वाले 20 वर्ष बाद मनुष्य की आयु घट कर 6 घंटे मात्र रह जायेगी। उन्होंने कहा कि आजकल जो बड़ी बड़ी बीमारियां होती हैं उनका आरम्भ विदेशी जीवन पद्धति के कारण पहले विदेशों में हुआ। हमने भी उनकी जीवन शैली को अपना लिया जिससे हम भी उन बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। कार्यक्रम में पं. नरेन्द्रदत्त आर्य, श्री मूलशंकर, श्री रमेश चन्द्र स्नेही, श्रीमती जिमना देवी, श्री उम्मेद सिंह विशारद आदि ने भी अपनी–अपनी भजनों की प्रस्तुतियां दी। इसी के साथ वैदिक साधन आश्रम की पर्वत व वनों में स्थित दूसरी इकाई में आयोजित चौथे दिन का सत्संग समाप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन बहुत भव्यता एवं कुशलता से प्रसिद्ध आर्य विद्वान श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, हरिद्वार ने किया।

संगीत सन्ध्याः

हमारे गीतों से यदि वैदिक धर्म का प्रचार न हो तो हमारा गीत व संगीत फेल है।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून के शरदुत्सव के चौथे दिन 6–10–2018 को रात्रि 8.00 बजे से 10.15 बजे तक संगीत सन्ध्या का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में पं. सत्यपाल पथिक जी, पं. नरेश दत्त आर्य जी तथा श्रीमती मीनाक्षी पंवार जी आदि ने अपने गीत व भजनों से उत्सव में श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। संगीत सन्ध्या का आयोजन आश्रम सोसायटी के सदस्य श्री विजय कुमार गोयल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। पहली प्रस्तुति भजनोपदेशक श्री आजाद सिंह लहरी ने दी। उनके गीत के बोल थे **'हमें याद आये ऋषि दयानन्द के काम'।** दूसरी प्रस्तुति आर्य भजनोदपेशक श्री रमेश चन्द्र स्नेही जी, सहारनपुर की थी। उनके गाये भजन के बोल थे **'देव दयानन्द तेरे अहसान हम उतारेंगे कैसे लेकर कितने जन्म, लुट रहे थे कौम के जो लाल बच गये वो तेरी कृपा व बलिदान से'।** संगीत सन्ध्या में तीसरी प्रस्तुति श्री नरेन्द्र दत्त आर्य की थी। उनके भजन के बोल थे **'मेरा बोलना गाना बजाना दयानन्द ऋषि थे, वेद के पथ पर चले हम सारे यह सन्देश ऋषि का प्यारे, सारे गायें ऋषि का तराना, दयानन्द ऋषि थे'** इसके बाद एक बालक चि० उत्कर्ष अग्रवाल ने एक भजन **'ऐ मालिक तेरे बन्दे हम ऐसे हों हमारे करम, नेकी पर चले बदी से बचे ताकि हंसते हुए निकले दम।'** गाया व इसके साथ ही गिट्टार बजाकर श्रोताओं को रोमांचित किया। यह

प्रस्तुति बालक की कम आयु की दृष्टि से अत्यन्त सराहनीय थी।

शास्त्रीय धुनों पर आधारित भजन व गीतों की प्रसिद्ध गायिका श्रीमती मीनाक्षी पंवार के गीत भी संगीत–सन्ध्या में हुए। उनका पहला गीत था **'बरस–बरस रस वारि मैया, बूंद–बूंद को तेरी जाऊं, बार–बार बलिहारी मैया। नदी सरोवर सागर बरसे लागी झड़िया भारी मैया, मेरे आंगन क्यों न बरसे मैं क्या बात बिगारी मैया। बरस बरस रस वारि मैया'**। यह प्रसिद्ध भजन पं. बुद्ध देव विद्यालंकार जी का लिखा हुआ है। गायिका श्रीमती पंवार जी ने दूसरा भजन **'तुझे मनवा जिसकी तलाश है उसका तेरे अति निकट वास है। काहे दरबदर तू भटक रहा वो तो तेरे दिल के पास है।'** बहिन मीनाक्षी पंवार जी ने तीसरा गीत गाया जिसके शब्द थे **'परम पिता परमेश्वर तूने जग कैसे साकार रचा, स्वयं विधाता निराकार तूने किस भांति साकार रचा।'** इसके बाद संगीत–सन्ध्या का संचालन कर रहे श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी ने अकबर व तानसेन के संवाद को प्रस्तुत किया। एक बार अकबर ने तानसेन को अपने गुरु का संगीत सुनवाने को कहा। तानसेन अकबर को अपने गुरु की कुटिया पर ले गये। उन्होंने अकबर को अपने गुरु को दूर से दिखाया। अकबर की इच्छा पूरी करने के लिये तानसेन एक बेसुरा गीत गाने लगा। इससे ईश्वर की साधना में बैठे गुरु की आंखे खुल गई। उन्होंने तानसेन को कहा कि तुम यह बेसुरा गीत क्यों गा रहे हो? तुम्हें क्या हो गया है। तानसेन ने गुरु जी से उस गीत को सस्वर सुर व ताल में गाने का निवेदन किया। तानसेन ने गुरु का वाद्य यन्त्र बजाया। गुरु जी ने शिष्य की विनती स्वीकार की और गीत गाया। अकबर गुरु जी का गीत सुनकर सन्तुष्ट हुआ। उसने तानसेन को कहा कि तुम तो इतना अच्छा नहीं गाते। इसका उत्तर तानसेन ने यह कहकर दिया कि मैं आपके दरबार का गवैया हूं और मेरे गुरु सृष्टिकर्ता ईश्वर के दरबार के गवय्या हैं।

पं. नरेश दत्त आर्य ने पहला भजन **'प्रकृति से लड़ाई इन्सान की ये कहानी है ऋषिवर महान की'** प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द ने ईश्वर को जानने और मृत्यु से मुक्ति पाने के लिये अपने पिता का घर छोड़ा था। ऋषि ने इन दोनों प्रश्नों के सत्य उत्तर जाने थे। अपने जीवन में रहस्य बने इस ज्ञान का प्रचार कर उन्होंने पूरी मानव जाति का कल्याण किया। श्री नरेशदत्त आर्य ने दूसरा भजन गाया जिसके बोल थे **'चारों ओर अन्धेरा छाया है घनघोर देता नहीं दिखाई मैं जाऊं किस ओर।'** श्री आर्य जी ने तीसरा भजन गाया जिसके बोल थे **'तो कितना अच्छा होता, गहरे जख्मों को देखते ही रहे कोई मरहम चुना होता तो कितना अच्छा होता।'**

आचार्य जी ने एक व्यंग्य भी सुनाया। उन्होंने कहा कि एक राजकुमारी ने अपने विवाह की शर्त रखी कि जिसमें सबसे कम बुराई होंगी उसी को वह पति के रूप में वरण करेगी। सभी लोगों ने कहा कि उनके अन्दर कई बुराईयां हैं। एक व्यक्ति आया उसने कहा कि मेरे अन्दर केवल दो बुराईयां हैं। राजकुमारी ने उसे अपना पति चुन लिया। विवाह के बाद राजकुमारी ने अपने पति से पूछा कि तुम्हारें अन्दर कौन सी दो बुराईयां हैं। उसके पति ने कहा कि एक बुराई तो यह है कि मैं कुछ जानता नहीं। और दूसरी बुराई यह है कि मुझे कोई समझाये तो मैं किसी की कोई बात मानता नहीं। पण्डित जी ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन की एक घटना का वर्णन किया जिसमें उन्होंने एक गरीब मां के बच्चे को बचाने के लिये उसकी जगह स्वयं को बलि के लिये प्रस्तुत किया था। इस घटना से सम्बन्धित एक गीत भी पण्डित जी ने श्रोताओं को सुनाया। इस गीत के बोल थे **'ऐ मां तू इतना रुदन न कर तुझे कष्ट क्या है न डर। वो दुःख अपने दिल का सुनाने लगी, रो–रो के आंसू बहाने लगी। ये काल भैरव जी भर गायेगा मेरे कुल का दीपक बुझ जायेगा।'** पंडित नरेशदत्त जी ने चौथा भजन भी सुनाया जिसके बोल थे **'ऋषि**

न अपनी मुसीबत पे रोये जो रोये तो भारत की हालत पे रोये।' रात्रि 9.55 बजे पंडित सत्यपाल पथिक जी ने एक गीत प्रस्तुत किया जिसे वह पूरी तन्मयता से गाते हैं। पण्डित जी के गाये इस गीत के बोल थे **'मैं पागल हूं, मैं पागल हूं दीवाना हूं, अलमस्त अलमस्त मस्ताना हूं, जो शमा जलायी ऋषिवर ने उस शमा का मैं परवाना हूं।'** यह संगीत–सन्ध्या कार्यक्रम की अन्तिम प्रस्तुति थी। भजन गाने से पूर्व पण्डित पथिक जी ने कहा कि **संगीत एक बहुत बड़ी कला है। हम आर्यसमाज के प्रचारक हैं। यदि हमारे गीत गाने से वैदिक धर्म का प्रचार न हो तो हमारा गीत व संगीत फेल है।** संगीत सन्ध्या के अध्यक्ष श्री विजय आर्य जी ने सभी प्रस्तुतियों को बहुत प्रभावशाली बताया और सबका धन्यवाद किया। शान्ति पाठ हुआ जिसके बाद संगीत–सन्ध्या का समापन हुआ।

समापन दिवस पर 6 विद्वानों का अभिनन्दन, भजन एवं सत्संग आदि आयोजन

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून का 5 दिवसीय शरदुत्सव दिनांक 7–12–2018 को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस दिन प्रातः 5 से 6 बजे तक स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी के मार्गदर्शन में योगासन एवं योग ध्यान साधना का प्रशिक्षण दिया गया। यजुर्वेद पारायण की पूर्णाहुति हेतु यज्ञ प्रातः 6.30 बजे से स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में आरम्भ हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति लगभग 8.00 बजे हुई। पूर्णाहुति के बाद भजन एवं प्रवचनों की श्रृंखला आरम्भ हुई। पं. सत्यपाल पथिक जी एवं श्री नरेश दत्त आर्य जी के बहुत प्रभावशाली भजन हुए। भजनों के पश्चात आचार्य उमेशचन्द्र वैदिक प्रवक्ता जी का प्रवचन हुआ। **उन्होंने कहा कि जीवात्मा जब शरीर को छोड़ता है तो वह अकेला नहीं जाता।** आचार्य जी ने स्थूल व सूक्ष्म शरीर की चर्चा करते हुए कहा कि मृत्यु होने पर स्थूल शरीर यहीं पड़ा रहता जबकि आत्मा और उसका सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर से निकल जाते हैं। आचार्य जी ने बताया कि हमारा शरीर 17 सूक्ष्म तत्वों से मिलकर बना है। इस सूक्ष्म शरीर में संकल्प व विकल्प करने वाला हमारा मन भी सम्मिलित है। सूक्ष्म शरीर में हमारा चित्त भी होता है जिसमें हमारे सभी कर्मों के संस्कार और स्मृतियां रहती हैं। हमारा सूक्ष्म शरीर सृष्टि उत्पत्ति के समय परमात्मा ने बनाया है जो कि मुक्ति तक अथवा प्रलय तक हमारे साथ रहता है तथा प्रलय व मुक्ति में ही नष्ट होता है। जन्म के समय हमारा सूक्ष्म शरीर धर्म व अधर्म के संस्कार लेकर इस संस्कार में आता है। **चित्त गुप्त है तथा इसी को चित्रगुप्त कहा जाता है।** आचार्य जी ने पौराणिक चित्रगुप्त के स्वरूप की चर्चा की और उसका युक्ति पूर्वक खण्डन व प्रतिवाद किया। आचार्य जी ने कहा कि हमें अपने चित्त को पवित्र रखने के साथ ईश्वरोपासना तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म करने चाहिये। नेत्र, कर्ण आदि इन्द्रियों से हमें वेद विहित कर्म करने चाहिये जिससे हमारा प्रारब्ध उन्नत बनता है। इससे हमारा अगला जन्म भी उन्नत व सुखी होगा।

आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी के बाद स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी का आशीर्वाद हुआ। उन्होंने कहा कि चित्त की वृत्तियों को रोकना योग व समाधि है। अभ्यास व वैराग्य से मन का निरोध होता है। स्वामी जी ने कहा कि सुख होगा तो राग होगा और दुःख से द्वेष उत्पन्न होता है। स्वामीजी ने कहा कि हमें राग को हटाना है। हमारे जितने सम्बन्ध हैं वह संसार में आने पर बनते हैं और संसार से जाने के बाद सभी सम्बन्ध टूट जाते हैं।

शरदुत्सव का समापन प्रातः 10 बजे से आश्रम के भव्य एवं विशाल सभागार में हुआ। श्री रमेशचन्द्र स्नेही, श्री आजाद सिंह लहरी, श्री नरेन्द्र दत्त आर्य, पं. सत्यपाल पथिक जी के प्रभावशाली भजन हुए। द्रोणस्थली कन्या

गुरुकुल की कन्याओं ने मंगलाचरण एवं भजन सुनाया। कार्यक्रम में आचार्य डा. धनंजय आर्य, पं. सूरत राम शर्मा, डा. अन्नपूर्णा, डा. सुखदा सोलंकी जी के सम्बोधन हुए।

मुख्य प्रवचन आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का हुआ। आचार्य जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने जन्मना जाति को स्वीकार नहीं किया। ऋषि दयानन्द भाग्यवाद को भी नहीं मानते थे। ऋषि पुरुषार्थ को मानते थे और इसी से हमारा भाग्य बनता व सुधरता है। आचार्य जी ने कहा कि देश की आजादी से पूर्व आर्यसमाज के गुरुकुलों से जन्मना जातिवाद समाप्त हो गया था। आर्यसमाज के गुरुकुलों में सभी वर्णों व जन्मना जाति के लोग पढ़ते थे, स्नातक बनकर वह पौरोहित्य कार्य करते हुए परिवारों में यज्ञ कराते थे। उनसे कोई उनकी जाति नहीं पूछता था। सभी पण्डित कहलाते थे। **आचार्य जी ने कहा कि देश की आजादी के बाद जन्मना जातिवाद के आरक्षण की व्यवस्था ने आर्यसमाज का काम चौपट कर दिया। जो पंडित बन गये थे उन्होंने भी आरक्षण का लाभ प्राप्त करने के लिये स्वयं को दलित बना डाला। जन्मना जातिवाद और आरक्षण से समाज में अनेक विकृतियों का जन्म हुआ है। आचार्य जी ने यह भी कहा कि जन्मना जातिवाद के कारण योग्य सन्तानों को उपयुक्त वर–वधु नहीं मिलते जिससे कई बार कुछ लोग तो आत्महत्या तक कर लेते हैं। आचार्य जी ने कहा जन्मना जातिवाद समाज में द्वेष व हिंसा को बढ़ा रहा है।** आचार्य जी ने कहा कुछ समय पहले सरकार ने आरक्षण पर जो कानून पास किया है उसमें अनेक खामियां हैं।

आचार्य उमेशचन्द्र वैदिक प्रवक्ता ने लोगों को कहा कि आपने तपोवन आश्रम में 5 दिनों तक जो यज्ञ, साधना, उपासना, तप, योगाभ्यास, स्वाध्याय व विद्वानों के प्रवचन सुने हैं उससे आप देवता बन गये हैं। आप आर्यसमाजों के माध्यम से समाज में देवत्व के विचारों का प्रसार कर अपने जीवन को सफल करें। स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने भी श्रोताओं को सम्बोधित किया।

आज वैदिक साधन आश्रम तपोवन की ओर से 6 विद्वानों व ऋषि भक्तों का अभिनन्दन किया गया। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. जयदत्त उप्रेती, पं. केशवमुनि – भिण्ड, माता श्रीमती नरेन्द्र बब्बर, माता श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा, श्री राजकुमार भण्डारी तथा श्री दीपक कुमार शास्त्री वह विद्वान ऋषि भक्त हैं जिनका अभिनन्दन किया गया। श्री दीपक कुमार शास्त्री गुरुकुल पौंधा के स्नातक हैं जिन्हें कुछ दिन पूर्व एशियन गेम्स में रजत पदक प्राप्त हुआ था। सभी विद्वानों को अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। अभिनन्दन पत्र का वाचन आश्रम के मंत्री प्रेम प्रकाश शर्मा, श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी, श्री मनमोहन कुमार आर्य, श्री विजय कुमार गोयल ने किया। सभी विद्वानों को शाल ओढ़ाई गयी, पुष्प मालायें पहनाई गई, स्मृति चिन्ह एवं साहित्य भेंट किया गया। हमारा सौभाग्य रहा कि हमें इन अभिनन्दन पत्रों को बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन विद्वानों के आतिरिक्त आश्रम के अनेक सहयोगियों का भी सम्मान किया गया। जिन विद्वान एवं विदुषी बहिनों के प्रवचन हुए उन्हें भी शाल, पुष्प मालाओं एवं साहित्य आदि देकर सम्मानित किया गया। इन सम्मानित व्यक्तियों में पं. सत्यपाल पथिक जी, आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ, श्री नरेशदत्त आर्य, डा. धनंजय आर्य, डा. अन्नपूर्णा जी, डा. सुखदा सोलंकी जी आदि सम्मलित हैं। आश्रम के पूर्व मैनेजर श्री विजेश गर्ग को भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में देश भर से लोग पधारते हैं। सभागार पूरा भरा हुआ था। कार्यक्रम की समाप्ति पर ऋषि लंगर में सबने भोजन किया। आश्रम में दूर–दूर से पधारे लोगों से हमने बातचीत की। सभी हमें कार्यक्रमों एवं व्यवस्था की दृष्टि से सन्तुष्ट दिखाई दिए। अगले ग्रीष्मोत्सव की प्रतीक्षा करते हुए सभी अतिथि आश्रम से विदा हुए।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन नालापानी, देहरादून दानदाताओं की सूची

11–5–2018 से 1–10–2018 तक

क्र.स.	नाम	धनराशि	क्र.स.	नाम	धनराशि
1	श्री चेरढा गर्वित सत्या, फरीदाबाद	1100	41	आर्य समाज किशन नगर दिल्ली	5350
2	श्री दिवाकर सिरधाकर पलवल	2100	42	आर्य समाज प्रेम नगर, देहरादून	1000
3	श्रीमती पुष्पलता गुप्ता, आगरा	1100	43	श्रीमती निर्मला जी, देहरादून	1101
4	चौ0 ओंकार सिंह, देहरादून	2100	44	श्रीमती विद्यावती जी, देहरादून	1100
5	श्रीमती सत्या नांदल, रोहतक	2100	45	श्री धर्मवीर तलवार, देहरादून	1100
6	आर्य समाज, शामली	2100	46	श्री जयभगवान शर्मा, देहरादून	1001
7	डा0 ब्रजपाल सिंह, देहरादून	1100	47	श्री वेदांश आर्य, यमुनानगर	1100
8	श्री सतीश पालीवाल जी	1100	48	श्री मनीष आर्य, रोहतक	1100
9	श्री संजीव मलहोत्रा, दिल्ली	1100	49	श्री पवनजीत जी	1000
10	श्री शिव कुमार गाबा, दिल्ली	2100	50	श्री ज्ञान प्रकाश कुकरेजा, करनाल	1000
11	महिला सत्संग मंडली, अम्बाला	1100	51	श्री सत्यपाल आर्य, देहरादून	3100
12	श्री रमण कुमार, विकासनगर	1100	52	श्री देवराज हसीजा, दिल्ली	1100
13	मास्टर रामपाल सिंह, कसेरवा	1001	53	राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ दिल्ली	2100
14	श्रीमती शकुन्तला कालरा, रुडकी	1100	54	श्रीमती माधुरी आर्य, देहरादून	2100
15	श्री ईश्वर कुमार आर्य, चण्डीगढ	1000	55	श्रीमती वेद कुमारी जी, दिल्ली	11000
16	चौ0 सेवाराम, अम्बेहटा	1100	56	विश्वप्रिय आचार्य जी, गुजरात	5000
17	श्री श्याम सुन्दर सोनी, गुडगांव	1100	57	श्री सचिन गुप्ता, बरेली	2500
18	श्री संकला अरोडा, दिल्ली	1100	58	श्री अनिल अहूजा, लखनऊ	1000
19	डा0 जे0 के0 गुप्ता, रायपुर	5100	59	श्री श्यामलाल मटलानी, नागपुर	1000
20	श्री एस0 पी0 सिंह, देहरादून	1100	60	श्री दिनेश शर्मा जी, अमृतसर	21000
21	श्रीमती सरला गांधी चौधरी, दिल्ली	5100	61	श्रीमती आशा अरोडा, मेरठ	2100
22	श्री सुरेन्द्र कुमार बुद्धिराजा, दिल्ली	5100	62	श्री प्रतीक गुप्ता, बिलासपुर	1100
23	श्री जितेन्द्र कुमार खरबन्दा, दिल्ली	5100	63	श्री गुरुदत्त शर्मा जी, उधम सिंह नगर	21000
24	आर्य समाज करनाल रोड कैथल	1100	64	आर्य समाज कांसा छत्तीसगढ	30000
25	श्री लाजपत कुकरेजा, दिल्ली	1100	65	श्रीमती मानसी	2000
26	श्री हरकेश कुमार ग्रोवर, दिल्ली	1100	66	श्रीमती संगीता कुमार, हैदराबाद	10000
27	आर्य समाज राधापुरी दिल्ली	1100	67	माता नरेन्द्र बब्बर, तपोवन	1000
28	श्री वेद प्रकाश आर्य, रोहतक	1100	68	श्री कृष्ण लाल पाल, तपोवन	1000
29	श्रीमती रेणु शाह, देहरादून	1100	69	श्री कृष्ण कान्त जी, देहरादून	11000
30	श्री ऋषभ आर्य, दिल्ली	1100	70	श्री मनमोहन कुमार जी, देहरादून	1100
31	श्री राम भजन मदान जी, दिल्ली	1100	71	मौहम्मद आदिल, देहरादून	2000
32	श्रीमती लाजवन्ती जी, रोहतक	15000	72	मै० सीताराम जिंदल फाउन्डेशन	15000
33	आर्य मण्डली रानीबाग, दिल्ली	2100	73	श्री रविन्द्र आर्य, दिल्ली	2000
34	श्री ओम प्रकाश शास्त्री, मुज्जफरनगर	1100	74	कु0 अंजना सहगल, देहरादून	1000
35	श्री विद्या राम प्रकाश गुप्ता, आगरा	1000	75	श्रीमती ऋचा शास्त्री, सहरनपुर	1100
36	श्री जगदीश चन्द, गाजियाबाद	1100	76	श्रीमती कृष्णा आर्या, देहरादून	1000
37	श्री योगराज अरोडा, दिल्ली	2000	77	श्रीमती मीना सैनी, देहरादून	1100
38	श्रीमती आशा अरोडा, दिल्ली	2000	78	डा0 सरला आर्या, पांवटा	2100
39	श्रीमती सुक्रिता अरोडा, दिल्ली	2000	79	श्री कृष्ण लाल डंग, पांवटा	5000
40	श्री राजेन्द्र छाबडा, रोहतक	5100	80	श्री कैलाश पालीवाल जी	1100

81	श्रीमती शान्ति गुप्ता, हरिद्वार	1100
82	श्रीमती विमला गुप्ता, हरिद्वार	1100
83	श्री नरेश कुमार खन्ना, दिल्ली	1100
84	श्री राजीव कुमार खन्ना, दिल्ली	1000
85	श्री रमेश दत्त दीक्षित, बागपत	2100
86	श्री ऋषि कथूरिया, रोहतक	1100
87	श्री सक्षम सचदेवा, रोहतक	1100
88	श्री दिलीप बेलाजी, मुम्बई	4000
89	श्री संजय कुमार आर्य, यमुनानगर	4900
90	डा0 रिद्धि आर्य, बहादराबाद	2100
91	डा0 अशोक कुमार, सहारनपुर	1000
92	श्रीमती सविता जी, झज्जर	3100
93	चो0 ओंकार सिंह, देहरादून	1000
94	श्रीमती सरोज मिगलानी, चण्डीगढ	10000
95	आर्यन क्लासिक वैदिक ट्रस्ट, दिल्ली	4000
96	श्री धर्म चन्द्र थरेजा, हरियाणा	1000
97	श्री यशपाल जी, दिल्ली	2100
98	हीरो मोटर को0 लि0, नई दिल्ली	100000
99	श्री विनोद कुमार शाह, देहरादून	1101
100	श्री मातवर राजकिशोर उपाध्याय जी	1100
101	श्री मोहम्मद आदिल जी, देहरादून	3000
102	श्रीमती मायावती जी, करनाल	5100
103	श्री कृष्ण पाल जी	1100
104	श्री होशियार सिंह, भिवानी	2100
105	श्री विजय कुमार, भिवानी	1100
106	भारत स्वाभिमान न्यास पतंजली योग समिति	3100
107	श्री सत्यपाल सिंह नागर जी	1100
108	श्री करार सिंह नागर	1100
109	श्री श्रवण कुमार देहरादून	1100
110	श्री ज्ञानशु जी, मुम्बई	1500
111	श्री वेद प्रकाश आर्य, दिल्ली	2100
112	श्रीमती सत्या नान्दल, रोहतक	3100
113	श्रीमती सुरेन्द्र अरोडा जी, देहरादून	5000
114	श्री प्रेम पाल शास्त्री, आगरा	2100
115	श्री जे०एस० रावत जी, देहरादून	2000
116	श्री सीगमसेटी वेकंटानाथ, महाराष्ट्र	1111
117	श्री के0 काशी विश्वनाथम, तेलंगना	1000
118	श्रीमती लक्ष्मी देवी, तेलंगना	1000
119	श्री अश्विनी कुमार बब्बर, दिल्ली	2100
120	श्रीमती सुमन नांगिया जी, देहरादून	150000
121	श्री निर्मल श्रीधर जी, फरीदाबाद	3100
122	सार ग्लोबल, मुम्बई	50000
123	श्री गौरीराम जी, देहरादून	1100
124	श्री कुलदीप जी एडवोकेट	1000
125	श्री बलभद्र जी, सोलन	2500
126	डा0 कृष्ण लाल डंग जी, हि0 प्र0	5000
127	श्रीमती प्रतिभा साहू कोलकाता	1700
128	श्री कृष्ण बलदेव बत्रा, दिल्ली	1000
129	श्री रमेश टांगडी, देहरादून	2000
130	श्री जी0 के0 अरोडा, दिल्ली	1100
131	श्रीमती धर्म देवी, दिल्ली	1100
132	श्री ओ0 पी0 अरोडा, जालन्धर	1100
133	श्री एन0 के0 अरोडा, तपोवन	1100
134	श्री सुरेन्द्र अरोडा, देहरादून	5000
135	श्रीमती सरोज कुकरेजा जी, दिल्ली	40000
136	श्री दर्शन कुमार कुकरेजा, दिल्ली	60000
137	डा0 ब्रजभूषण कुमार, देहरादून	1000
138	श्री सुरेन्द्र कुमार छिब्बर, तपोवन	5000
139	श्री ज्ञानचन्द्र अरोडा, तपोवन	5100
140	श्रीमती लीलावती जी, तपोवन	1100
141	श्री एस0 के0 गुप्ता, तपोवन	5100
142	माता नरेन्द्र बब्बर, तपोवन	5100
143	श्री के0 एल0 पाल, तपोवन	5100
144	श्री पी0 पी0 शर्मा जी, तपोवन	5100
145	श्री ओंकार सिंह एवं श्रीमती जगवती जी, देहरादून	10200
146	श्री ओम प्रकाश पालीवाल जी	5100
147	आर्य समाज मन्दिर नत्थनपुर दे0दून	3000
148	श्रीमती रेनू माटा जी, देहरादून	5100
149	श्री सुधीर कुमार माटा, देहरादून	5100
150	श्रीमती सुरेन्द्र अरोडा जी, देहरादून	5000
151	श्री केशर सिंह, तपोवन	5100
152	श्री रघुनाथ आर्य, देहरादून	2500
153	श्री रणबीर सिंह, हरियाणा	2100
154	गुलाटी परिवार, तिलकनगर दिल्ली	5100
155	श्री आदित्य आर्य जी, देहरादून	2100
156	श्रीमती सरोजयति जी, मुरादाबाद	1000
157	श्री सीता राम कालडा जी, दिल्ली	1000
158	श्री योगराज अरोडा जी, दिल्ली	11000
159	श्रीमती नन्दिता चंदेल, देहरादून	1100
160	श्री सुनील अग्रवाल जी, देहरादून	2100

आर्य निर्माण शिविर

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून एवं आर्य निर्मात्री सभा नई दिल्ली के संयुक्त प्रयासों से दिनांक 24 एवं 25 दिसम्बर 2018 को 12 वर्ष से 35 वर्ष की आयु के युवकों के लिए आर्य निर्माण शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर में आवास एवं भोजन निःशुल्क हैं। केवल श्रद्धापूर्वक दिया गया दान ही स्वीकार किया जायेगा। आप अपने विद्यालय तथा अपने परिवार के युवकों को शिविर में भेजने की कृपा करेंगे।

स्थान : वैदिक साधन आश्रम तपोवन नालापानी, देहरादून।

अवधि एवं समय : 24 दिसम्बर प्रातः 7 बजे से 25 दिसम्बर सायं 6 बजे तक

सम्पर्क सूत्र : श्री बृजेश आर्य, देहरादून। दूरभाष 8077337953,
श्री विजय पाल सिंह, हरिद्वार। दूरभाष 9410395336

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

रायपुर रोड (नालापानी), देहरादून–248008, दूरभाष : 0135–2787001

आत्मकल्याण का स्वर्णिम अवसर

योग–साधना, यजुर्वेद पारायण एवं गायत्री यज्ञ का विशेष आयोजन

तदनुसारेण 12 मार्च से 20 मार्च 2019 तक

यज्ञ के ब्रह्मा–स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी

आत्मकल्याण के जिज्ञासुओं के लिए प्रभुकृपा से तपोवन आश्रम के ऊपरी प्रभाग–पहाड़ी पर एक लाख गायत्री महामंत्र एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। सच्चे, योग्य तथा समर्थ जिज्ञासु जन पूर्ण उत्साह के साथ श्रद्धा–आस्था समन्वित हुए भाग लेवें। यह आयोजन याज्ञिकों के लिये सर्वथा निःशुल्क होगा। श्रद्धापूर्वक दिया गया सहयोग ही स्वीकार किया जाएगा।

आयोजन में भाग लेने वाले जिज्ञासुओं के लिये अनिवार्य नियम अधोलिखित है–

सभी यज्ञप्रेमी सज्जनों और योग साधकों को 11 मार्च 2019 की सांयकाल तक पहुंचना आवश्यक होगा। 12 मार्च 2019 की प्रातःकाल से नियमित कार्यक्रम प्रारम्भ हो जायेंगे। कृपया अपने साथ चाकू, टार्च, कॉपी, पैन तथा ओढ़ने का वस्त्र अवश्य लायें।

कार्यक्रम सारिणी

प्रातः जागरण	3–4 के मध्य
योग साधना, आसन प्राणायाम, ध्यानादि	4 से 7 बजे प्रातः
यज्ञ प्रातःकाल	7:30 से 9:30
प्रातः प्रातराश	9:30 से 10:00
यज्ञ–सायंकाल	3.30 से 5.30 सायं
साधना	6.00 से 8.00 बजे रात्रि
भोजन रात्रि	9.00 बजे तक
रात्रि–शयन	1.00 से 3.00 बजे

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री	**ई. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**सुधीर माटा**
अध्यक्ष–09710033799	सचिव–09412051586	कोषाध्यक्ष–9837036040

Delite KOM

freedom to work...

DELITE KOM LIMITED

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

Delite KOM **DELITE KOM LIMITED**

Kukreja House, IInd Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055
Ph. : 011-46287777, 23530288, 23530290, 23611811 Fax : 23620502 Email : delite@delitekom.com

DNV CERTIFIED

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2018-2020 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

With Best Compliments From

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

- TPM Certified
- ISO / TS - 16949 - 2002 Certified
- ISO - 14001 Certified
- OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बस बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर/फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित। संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com